मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

▸ सितम्बर २००९ ▸ वर्ष ५९ ▸ अंक ९

अखिल भारतीय समिति की बैठक
समाज सुधार एक निरन्तर प्रक्रिया है
– सम्मेलन सभापति नन्दलाल रुँगटा

बायें से राष्ट्रीय संयुक्त मन्त्रमंत्री श्री संजय हरलालका, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, राष्ट्रीय मन्त्रमंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा, पूर्व सभापति श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बद्रीप्रसाद भीमसरिया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री गणेश प्रसाद कंदोई एवं उत्कल प्रान्तीय अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र लाठ।

निःशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर

कर्नाटक में प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का गठन।

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity.
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph : 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

समाज विकास

✦सितम्बर २००९ ✦वर्ष ५९ ✦अंक ०९ ✦एक प्रति–१० रु. ✦वार्षिक–१०० रु.

✦संपादक : नंदकिशोर जालान ✦ कार्यकारी संपादक : शंभु चौधरी

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	४–५
अपनी बात : शम्भु चौधरी	६
अध्यक्षीय : नन्दलाल रुँगटा	७–८
अखिल भारतीय समिति की बैठक	
महामंत्री रामअवतार पोद्दार की रपट	९–११
समाज सुधार एक निरन्तर प्रक्रिया है – सम्मेलन सभापति नन्दलाल रुँगटा	१२–१५
सम्मेलन ने २७२ लोगों का किया नेत्र परीक्षण	१६
शिक्षा कोष ने छात्रों को बांटे यूनिफार्म	१७
कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का गठन	१८
नये संरक्षक सदस्य की सूची	१९
कवि परिचय :	
बनेचंद मालू	२०
केसरीकांत शर्मा 'केसरी'	२१
नये आजीवन और विशिष्ट सदस्यों की सूची	२३–२४
राज्यपाल की पुस्तक समिक्षा :	
''ए फ्रेंक फ्रेंडसिप : गांधी एण्ड बंगाल'' ए डिस्क्रीपटीक क्रोनोलाजी – सीताराम शर्मा	२५–२६
समाज के सामने युगीन प्रश्न – डॉ. अरूण प्रकाश अवस्थी	२७
राजस्थानी खान पान और उसकी विशिष्टता – मनमोहन बागड़ी	२९
हास्य कथा : 'मारो भचीड़' – ताऊ शेखावाटी	३०
कविता : ''माँ'' – प्रेमलता खण्डेलवाल	३१
अंतर्जातीय विवाह–बढ़ते कदम – डॉ. श्यामसुंदर हरलालका	३२–३३
श्री अग्रसेन महाराज 5001वीं जयन्ति :	
श्री महाराजा अग्रसेन – स्वराज्यमणी अग्रवाल	३४
सावन महोत्सव जबलपुर में सम्पन्न	३५
युगपथ चरण :	
बिहार : राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा जरूरी – डॉ. जगन्नाथ मिश्र	३६
श्री रमेश कुमार बंग पुन: अध्यक्ष निर्वाचित	३७
श्रद्धांजलि : किशोरी लालजी मोदी का निधन	३८
आन्ध्र प्रदेश : छात्रों को छात्रवृत्ति वितरण	३८

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ E-mail: samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा ऐभल प्रिंटर्स प्रा.लि., ४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७००००९ में मुद्रित

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है :

राजस्थानी शब्दकोष अत्यन्त उपयोगी

समाज विकास जुलाई २००९ प्राप्त हुआ। 'अन्तर्जातीय विवाह' ऐसी वर्तमान समस्या पर गोष्ठी का आयोजन करना सम्मेलन की जागरुकता एवं चेतना का प्रमाण है। साथ ही कविवर द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की कविताएं प्रकाशित कर आपने स्तुत्य कार्य किया है।

राजस्थानी शब्दकोष अत्यन्त उपयोगी एवं सामयिक स्तम्भ है। यह स्तम्भ जहां मायड़ भासा के प्रति प्रेम का द्योतक है। वहीं व्यक्तिगत मेरे लिए अत्यन्त उपयोगी है।

– डा. अरुण प्रकाश अवस्थी
सी.ए. 5/10 देशबंधु नगर, बागुईआटी,
कोलकाता–700059

जूलाई २००९ के अंक में प्रकाशित राजस्थानी शब्दकोष म्हारे सारे राजस्थानियों की आपनी भाषा की समृद्धि को आभाष करायो है। या पांञ्चजन्य की बा गूंज है जो म्हारो सोयो आत्मसम्मान न जागृत कर दियो है। अनगिनत शब्दों को सही अर्थ की जानकारी ने म्हारे ज्ञान चक्षु न खोलकर आपण राजस्थानी होने का गर्व को भाव स्फुटित कियो है। म्हें और म्हारी नयी पीढ़ी के लिये यह एक सेतु को निर्माण कियो है, जिस्से आपणी भाषा, संस्कृति और समृद्धि की यात्रा सुगम होवगी।

थारै इस अतुलनीय प्रयास को हृदय से अभिनन्दन है।

– सीताराम बाजोरिया
मेसर्स– माधव निकेतन
शीतला गली, सुत्तापट्टी, मुजफ्फरपुर

''मर्ज बढ़ता गया-ज्यों ज्यों दवा की''

जुलाई २००९ के अंक में 'जन्तर–मंतर' शीर्षक पृष्ठ में सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा का आलेख पढ़ा। विवाह–शादियों पर उत्तरोत्तर बढ़ते फिजूल खर्च एवं दिखावा पर श्री शर्मा ने लिखा है ''मर्ज बढ़ता गया–ज्यों ज्यों दवा की''। परन्तु वे इस सत्य को भूल गये कि इस बीमारी की रोकथाम के लिये, जितनी सी दवा का प्रयोग किया गया, वह बिलकुल अनुपयुक्त थी।

एयर कन्डिशन कमरों के अन्दर बैठकर, कुछ नियम स्वेच्छा से बना डालने, एक सेमिनार आयोजित कर लोगों को आमंत्रित कर उनकी स्वीकृति करा लेने से अथवा 'समाज विकास' मासिक पत्र के पीछे के पृष्ठ में नियमों को छाप देने से, ये बीमारी मिट जायेगी यह सोच पूर्णतः गलत है।

सन् १९८५–८६ में श्री हरीशंकरजी सिंघानिया के सभापतित्व काल में इस विषय पर चर्चा एवं गहन विचार विमर्श हुआ था। तत्कालीन स्थायी समिति एवं कार्यकारिणी समिति में काफी बहस हुई। तदुपरान्त सर्वसम्मति से स्वीकृत हो एक प्रस्ताव अखिल भारतीय समिति में रखा गया। दुःख की बात है, सम्मेलन के वरिष्ठ सदस्यों ने अंत में इसमें भी अकारण मतभेद पैदा किये, जिससे यह प्रस्ताव पारित न हो सका, और यह जातीय आंदोलन काल के गाल में समा गया।

इसी काल में एक हवा चली थी एवं स्व. भँवरमलजी सिंघी के नेतृत्व में दिखावा एवं फिजूल खर्ची के विरुद्ध आंदोलन चला, तथा प्रदर्शन भी किए गये। अनेक गणमान्य व्यक्तियों के याने लड़के वालों के यहाँ प्रतिनिधि मंडल जा–जाकर उनसे मिला। इससे जो समाज की अवहेलना कर, मनमानी करने की हिमाकत करते थे उन्हें कुछ हिचकिचाहट हुई पर फिर भी भय नहीं हुआ।

सार यह है इसके लिए त्यागी और निष्ठावान व्यक्तियों की 'टीम' को वर्षों प्रयासरत रहना पड़ेगा। आवश्यकता हुई तो कुछ प्रोफेशनल व्यक्तियों की नियुक्ति भी करनी पड़ सकती है। पर जैसा श्री शम्भु चौधरी ने **'अपनी बात'** में लिखा है ''आज हर व्यक्ति खुद को स्थापित करने की दौड़ में लगा हुआ है और समाज का धन पानी की तरह बहा जा रहा है।''

– मोहनलाल चोखानी ''दमयन्ती अपार्टमेंट''
4 तल्ला, रविशंकर शुक्ला मार्ग, सिविल लाईन्स, नागपुर–440001

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन का चतुर्थ अधिवेशन रांची में 19 एवं 20 दिसम्बर 2009 को होना निश्चित हुआ है।

Change our Mindset

In July'09 issue of Samaj Vikash, in Page No. 8 an article has appeared written by Sri Sitaram Sharma. In this article there is mention of using a helicopter to shower flowers from the sky on the occasion of a marriage in Hyderabad. Sri Sharma has very rightly criticized this extravagant show.

Indeed it is an utter wastage of money which otherwise could have been utilised to feed some poor people. Awareness needs to be created amongst our community to avoid such wasteful expenditure to show off on occasions like marriage. If boy's side does it, psychologically the girl's side will also have tendency at least to equal it which ultimately leads to doubling of wasteful expenditure. Sometimes problem do arise if both the parties are not equally sound financially. By resorting to such actions, the image of our community gets tarnished in the eyes of public.

There is also urgent need to change our mindset and get rid of the dowry system which has definite evil effects in a society and often girls fall victim to it. It may not be possible to make a drastic change in the entire society overnight. We can make a beginning for this objective by felicitating in public the persons not accepting dowry and they will serve as example for others to follow. This can be done through various branches of our association.

- K.N. Ranasaria
"FMC Fortuna" 2nd Floor
234/3A, A.J.C. Bose Road, Kolkata-700 020

'हाई टी' और 'सज्जन गोठ'

हमारे समाज के वैवाहिक कार्यक्रम में 'हाईटी' और 'सज्जन गोठ' दोनों ही कुरीति दर्शाते हैं। 'हाईटी की शोभा अगर बरात शाम चार बजे से पहले आ जाती है क्योंकि बूफे का समय प्राय: ७ से ९ रहता है। दो घण्टे में जो भी व्यक्ति शादी में आता है भर पेट खा लेता है। मैं अपने परिवार में लड़के की शादी होने पर सज्जन गोठ नहीं कराता सिर्फ देवताओं की पातलों को निकलवाता हूँ जो कि बहुत जरूरी है। 'सज्जन गोठ' में प्राय: सभी व्यक्ति को बिना इच्छा के बैठना पड़ जाता है जिससे भोजन की बर्बादी होती है। मेरे परिवार में आगे होने वाले लड़के के विवाह में 'हाईटी' भी बंद करना चाहता हूँ क्योंकि भर पेट भोजन के लिये बूफे ही काफी है। जो समाज सेवी इस कार्य में मेरा सहयोग करना चाहते हैं तो कृपया मुझसे सम्पर्क कर सकते हैं।

– परशुराम तोदी 'पारस'
17, के.एल. बर्मन रोड, सलकिया, हावड़ा
दूरभाष : 32967469 / 32406652
/3222349 / 3042851

अग्रसेन के लाल सुनो

सुरेश कुमार बंसल (लेघांवाला)

:: टेक ::

श्री अग्रसेन के लाल सुनो, वृद्ध, जवान और बाल सुनो।
उस महापुरुष के काम सुनो, जिसके वंशज कहलाते हो।

याद करो वो समय हिन्द में, श्री अग्रसेन महाराजा थे।
बल, बुद्धि, धनवान निति में, सब राजाओं में आगे थे।
वे प्रजा के हितकारी थे और, पढ़े लिखे न्यायकारी थे।
घर बल्लभ के जन्म लिया था, अग्रोहा खुशहाल सुनो।
श्री अग्रसेन के लाल सुनो।।

नाम, काम, गुण, शान देख कर, सब राजा ईर्ष्याते थे।
राजषी बागा, तेग हाथ में, राय आम ले राज चलाते थे।
नागराज घर आये थे, माधवी संग विवाह रचाये थे।
कारण माधवी संग इन्द्र के उठ गई थी ढाल सुनो।
श्री अग्रसेन के लाल सुनो।।

वैश्य गणों के मुकुट मणि थे, वैश्य धर्म निर्माता थे।
बने उपासक लक्ष्मी जी के, सब वेदों के ज्ञाता थे।
लोकतंत्र के रक्षक थे, समाजवाद प्रवर्तक थे।
आज उस युग पुरुष को हो गये ५१३४ साल सुनो।
श्री अग्रसेन के लाल सुनो।।

ना कोई अवतार लिया था, वो देश भक्त इंसान थे।
सूझ, बूझ और चतुराई से, किये अनोखे काम थे।
गऊ की सेवा करते थे, नहीं किसी से डरते थे।
दूध, दही, घी के अग्रोहा में बहते थे नाल सुनो।
श्री अग्रसेन के लाल सुनो।।

एक ईट और एक रुपैया सब दे, काम करा पास बैठाते थे।
दान धर्म–संतोष, अहिंसा, और कर्म का पाठ पढ़ाते थे।
अग्रोहा एक हस्ती थी, हर वस्तु मिलती सस्ती थी।
कह 'सुरेश' सब अठ्ठारह भाइयों की रहनी चाहिए एक ताल सुनो।
श्री अग्रसेन के लाल सुनो।।

– एम.जी. रोड, खालपाड़ा
सिलीगुड़ी–734005
मो.–09434044525

अपनी बात :

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

शुभ लाभ

इस 'शुभ लाभ' का अर्थ होता है कि कमाये हुए धन में लक्ष्मी जी का वास होना अर्थात मेहनत और ईमानदारी से कमाया गया धन ही 'शुभ लाभ' माना जाता है। राम नवमी और दीपावली के समय जिस खाते का पूजन करने की हमारी परम्परा रही है, उस पर लिखे 'शुभ लाभ' शब्द का संकेत स्पष्ट रूप से हमें हमारी संस्कृति की याद दिलाता है परन्तु आज समाज का एक वर्ग इस लाभ को लोभ में तब्दील कर अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित परम्परा को समाप्त करने में तुला है।

यह बात हमें मान लेनी चाहिए कि मारवाड़ी समाज एक प्रवासी समाज है। हमारे पूर्वजों ने यदि प्रवास में कोई जगह बनाई तो उसके लिए उन लोगों ने स्थानिय लोगों के साथ यहाँ की संस्कृति को भी आत्मसात किया था। समाज सेवा के उदाहरण प्रस्तुत किये जिसकी बदौलत मारवाड़ी समाज ने इतर समाज में अपनी साख कायम की, न कि सिर्फ व्यवसाय से मारवाड़ी समाज ने प्रतिष्ठा स्थापित की।

व्यवसाय सिर्फ मारवाड़ी समाज ही नहीं करता वरन समस्त वर्ग के लोग व्यवसाय करते हैं और यह बात भी सही है कि व्यवसाय के साथ लाभ के साथ–साथ लोभ स्वतः आ जाता है। परन्तु लाभ को लोभ के बदले 'शुभ लाभ' में बदलना मारवाड़ी समाज की पूँजी रही है। इस 'शुभ लाभ' का अर्थ होता है कि कमायें हुए धन में लक्ष्मी जी का वास होना अर्थात मेहनत और ईमानदारी से कमाया गया धन ही 'शुभ लाभ' माना जाता है। राम नवमी और दीपावली के समय जिस खाते का पूजन करने की हमारी परम्परा रही है, उस पर लिखे 'शुभ लाभ' शब्द का संकेत स्पष्ट रूप से हमें हमारी संस्कृति की याद दिलाता है परन्तु आज समाज का एक वर्ग इस लाभ को लोभ में तब्दील कर अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित परम्परा को समाप्त करने में तुला है। समाज के चन्द ऐसे व्यक्ति भले ही इस लोभ की कमाई से प्राप्त धन से खुद को धनवान की श्रेणी में स्थान प्राप्त करने में सफल रहे हों, समाज की नजर में उसका कोई स्थान नहीं हो सकता। मारवाड़ी समाज की यह परम्परा रही है कि समाज स्थानिय समाज को क्षति पहुँचाये बगैर अपना व्यवसाय स्थापित करे एवं समाज के कमजोर तबके को अपने व्यवसाय के साथ जोड़ कर उसे भी रोजगार प्रदान करे।

परन्तु समाज का एक वर्ग अपने धन के बलबूते कुछ ऐसी हरकतों में लिप्त हो जाए, जिससे स्थानिय समाज की क्षति होती हो या उसे हमारे कार्य से कष्ट होता हो, समाज का कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं चाहेगा। जो ऐसा कर रहे हैं हमें ऐसे लोगों की कड़े शब्दों में निन्दा करनी चाहिये। समाज में यह परम्परा रही है कि समाज का कोई व्यक्ति यदि गलत कार्यों में लिप्त पाया जाता हो तो उसका सामाजिक बहिष्कार तक किया जाना चाहिये, परन्तु समाज में संगठन के कमजोर होने से इस सजा का कोई औचित्य नहीं रह जाता, कारण कि इन सबके मन से समाज का डर समाप्त सा हो चुका है परन्तु इस डर को कायम रखने के लिए कड़े से कड़े शब्दों में निन्दा तो की ही जा सकती है ताकि समाज को क्षति पहुँचाने वाले इन चन्द लोगों के मन में समाज का भय बना रहे।

– शम्भु चौधरी

अध्यक्षीय :

''पधारो म्हारे देस रे''.

नन्दलाल रुँगटा, अध्यक्ष,
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

पिछले ४०० साल से भी अधिक के प्रवासी इतिहास के उपरान्त भी हमारे प्रवासी मारवाड़ी समाज के परिवारों में राजस्थानी संस्कृति को संजो कर रखा है। भारतीय उपमहाद्वीप से लेकर यूरोप तक फैला हुआ यह प्रवासी मारवाड़ी समाज राजस्थानी संस्कृति से आज भी पूर्ण रूप से जुड़ा है। मारवाड़ी समाज अपने घरों में राजस्थान के पर्व–त्यौहार उसी निष्ठा एवं उत्साह से मनाता चला आ रहा जैसे राजस्थान में मनाया जाता है। साथ ही कुछ स्थानिय पर्व–त्यौहार जैसे बिहार की छठ पूजा, बंगाल की दूर्गा पूजा, उड़ीसा में जगन्नाथ की रथ यात्रा, महाराष्ट्र का गणपति उत्सव, असम का बिहू को अपना कर समरसता का परिचय दिया है। होली–दीपावली तो हम सबके लिए राष्ट्रीय त्यौहार है। साथ ही बच्चों के साथ मिलकर गोबर के बड़कूल्ले बनाना (पान–सुपारी, चकला–बेलन, नारियल, ढाल–तलवार आदि) होली के पूर्व जब हम भक्त प्रहालाद की पूजा तत्पश्चात होलिका दहन करते हैं तो संध्या में स्वत: हमें बुराई पर अच्छाई की विजय का संदेश दे जाती है। साथ ही शुरु हो जाती है गणगौर की पूजा और होली के एक सप्ताह पश्चात ''ठंडी रोटी–शीतला माता की पूजा'' हमें राजस्थानी संस्कृति से जोड़कर रखती है। वहीं दीपावली के अवसर पर घर के प्रत्येक दरवाजे पर 'सूण' का जिमाना, पहले दिन शाम को 'जम दीये' की पूजा, दूसरे दिन छोटी दीपावली और फिर अगले दिन दीपावली की रात 'लक्ष्मी पूजन' और पूजा के उपरान्त बड़ों से आशीर्वाद लेना। दीपावली के दूसरे दिन अन्नकुट, फिर गोपाष्टमी हमारे संस्कार में रचा–बसा हुआ है।

देखा जाय तो राजस्थान में इतने पर्व–त्यौहार हैं कि उनकी गिनती यहाँ करना संभव नहीं है फिर भी संक्षिप्त में यह लिखा जा सकता है कि रामदेव जी से लेकर सालासर जी तक और प्रत्येक कबीले की अपनी–अपनी सती–राणी सती, छाजल–अमरी सती, धोली सती, ढाढ़ण सती आदि–आदि सभी की अपनी–अपनी महत्ता है। इस प्रकार लोक देवताओं में तेजाजी, देव जी, पाबू जी, गोगा जी, जुझार जी आदि। फिर जैन समाज के दो पंथ, ओसवाल समाज, ब्राह्मण समाज, माहेश्वरी समाज, अग्रवाल समाज सभी की अलग–अलग मान्यतायें, परम्परायें, देवी–देवता पर्व–त्यौहार। राजस्थान की संस्कृति सिर्फ यहीं समाप्त नहीं होती इसके बाद शुरु हो जाता है 'रिस्तों का त्यौहार' जैसे 'रक्षा बन्धन', 'तीज', 'चोक–चानणी', बछबारस इत्यादि। राजस्थान में मातम मनाये जाने की भी परम्परा थी, हांलाकि ये सब बातें इतिहास की बातें हो चुकी हैं। ठीक इसी प्रकार राजस्थान में सती परम्परा जिसे जौहर के रूप में जाना था, कुछ स्वार्थी तत्त्वों ने इस परम्परा का अनादर कर सती व्यवस्था के सम्मान को काफी ठेस भी पहुँचाई। जिसके कारण आज कानून की नजर में इस व्यवस्था को कठघरे में ला खड़ा किया है। इसके सामाजिक पहलू को नजरअंदाज करना किसी भी रूप में स्वागत योग्य नहीं है। जिस सती व्यवस्था की बात राजाराम मोहन राय ने की उसमें और राजस्थान के जौहर में काफी अन्तर है। वीरता और बलिदान के पक्ष की कायरता और बर्बरता के पक्ष से तुलना करना या देवराला में जिस तरह सती बनाई गई थी। इसे किसी भी रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

राजस्थानी संस्कृति के अन्दर पाई जाती है–हमारी सभ्यता, रीति–रिवाज, पर्व–त्यौहार, गीत–संगीत, पहनावा, बोली की मिठास, रहन–सहन, डिंगल साहित्य, भित्ती चित्रकला, और सबसे बड़ी बात जो इस समाज में पाई जाती है वह है ''वीरता के साथ–साथ त्याग''।

सम्मेलन के अध्यक्ष पद से जब हम राजस्थानी संस्कृति की बात करते हैं तो इसमें सर्वप्रथम मुझे अपने बचपन को भी याद करने का अवसर मिल जाता है। हमारा परिवार चाईबासा (झारखंड) में पिछली चार पीढ़ियों से बसा हुआ है, दादा जी का परिवार, पिता जी का परिवार आज तो पांचवी पीढ़ी हो गई, परन्तु अभी तक परिवार में राजस्थानी भाषा, पहनावे, रीति–रिवाज, पर्व–त्यौहार में कोई बदलाव नहीं

राजस्थान में मातम मनाये जाने की भी परम्परा थी, हांलाकि ये सब बातें इतिहास की बातें हो चुकी हैं। ठीक इसी प्रकार राजस्थान में सती परम्परा जिसे जौहर के रूप में जाना था, कुछ स्वार्थी तत्त्वों ने इस परम्परा का अनादर कर सती व्यवस्था के सम्मान को काफी ठेस भी पहुँचाई। जिसके कारण आज कानून की नजर में इस व्यवस्था को कठघरे में ला खड़ा किया है। इसके सामाजिक पहलू को नजरअंदाज करना किसी भी रूप में स्वागत योग्य नहीं है। जिस सती व्यवस्था की बात राजाराम मोहन राय ने की उसमें और राजस्थान के जौहर में काफी अन्तर है। वीरता और बलिदान के पक्ष की कायरता और बर्बरता के पक्ष से तुलना करना या देवराला में जिस तरह सती बनाई गई थी। इसे किसी भी रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आया। हम वैसे ही होली–दीपावली मनाते हैं जैसे राजस्थान की रीति–परम्परा रही है। हाँ! कुछ मायने में जो कुछ कमी देखने को मिलती है, वह है– शादी–विवाह, जच्चा–बच्चा के अवसर पर या पर्व–त्यौहारों पर गाये जाने वाले लोकगीतों का धीरे–धीरे हमारे बीच से विलुप्त होते जाना। प्राय: यह समस्या हर प्रवासी समाज के अन्दर पायी ही जायेगी। जहाँ उमर दराज महिलाओं को बड़ी आसानी से लोकगीत घर–घर में गाते देखा जा सकता था, जिसमें काफी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। आज इसका स्वरूप बदलता जा रहा है। लोकगीतों की परम्परा मात्र देवी–देवताओं के धोक–धोकने तक सिमटता नजर आ रहा है। अब तो यह परम्परा मिसरानी (ब्राह्मणी) तक सीमित होकर रह गई है। शादी–विवाहों में मिसरानी ही अब ये लोकगीत गाती है, घर की औरतें को केवल साथ देते देखा जा सकता है। नई उमर की महिलाएं तो साथ देने में भी संकोच करने लगी हैं। गणगौर के गीतों से यह बाण (आदत) बच्चों में डाली जाती है। जो धीरे–धीरे उसमें अपने संस्कार के बीज स्वत: ही प्रस्फुटित होने लगते हैं। इसके बाद होली के लोकगीत जो घर–घर गाये जाते हैं जिसमें परिवार के हर रिस्ते को हास्य के रूप में लेकर देखा जाता है। जिसमें बच्चे–बड़े, देवर–भाभी ननद–मामी सभी प्रकार के गीत पाये जाते हैं परन्तु देवर–भाभी के गीत ज्यादा लोकप्रिय होने के चलते उसका आनन्द लेने में कोई नहीं चूकता। इन गीतों में जो प्रेम व स्नेह झलकता है शायद ही किसी प्रेम गीतों में आपको देखने को मिलेगा। ये गीत उस जमाने के लिखे होते हैं जिस जमाने में भारतीय चलचित्र का प्रचलन तक नहीं हुआ था। देश के कुछ हिस्सों में रंगमंच (थियेटर) जरूर चलते थे, उनमें भी प्रेम की जगह धर्मिक या वीरता के नाट्य का ही बोलबाला था। प्रेम की बात हो और राजस्थान में मीरा की बात न हो ऐसा हो ही नहीं सकता। परन्तु आज समाज में प्रेम की जो परिभाषा बन रही है उसे देखकर हमें कई बार खुद को शर्म महसूस होने लगती है। कहीं शिक्षक अपनी मर्यादा को समाप्त करने में तुला है तो कहीं बच्चे अपने से बड़े का अनादर करने में अपना स्वाभिमान समझने लगे हैं। हमारी संस्कृति में जो व्यवस्था नहीं थी वे सभी कुरीतियाँ हमारी संस्कृति का अंग बनती जा रही है। शादी–विवाह से लेकर जन्म–मरण सभी जगह आडम्बर ने अपना स्थान बना लिया है। सबसे दुखदायी बात तो यह है कि अब हमारी संस्कृति में वृद्धाश्रम ने भी जगह बना ली है।

यह हमारे पूर्वजों की दूरदर्शिता थी कि उन्होंने मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना ७४ वर्ष पूर्व समाज सुधार के उद्देश्यों के साथ की। समाज में व्याप्त कुरीतियों, कमियों एवं खामियों के प्रति समाज को अगाह करने का कार्य सम्मेलन वैचारिक परिवर्तन के माध्यम से करता आया है। कुछ क्षेत्रों एवं विषयों में जैसे पर्दा प्रथा, बालिका शिक्षा, विधवा विवाह आदि में सफलता मिली है तो कुछ क्षेत्रों में अभी और कार्य करने की आवश्यकता है। समाज सुधार एक निरन्तर प्रक्रिया है, नयी–नयी सामाजिक कुरीतियाँ जन्म ले रहीं हैं, जिन्हें दूर कर समाज की उन्नति एवं प्रतिष्ठा को बनाये रखना है।

अन्त में दीपावली की आप सभी को मेरी शुभकामनाएँ देते हुए यह अनुरोध भी रहेगा कि हम दीपावली मिलन समारोह को सादगी के साथ समस्त परिवार के साथ जरूर से मनावें। ◆

अखिल भारतीय समिति की बैठक में

महामंत्री रामअवतार पोद्दार की रपट

◆ संरक्षक सदस्य 107 ◆ आजीवन सदस्य 83
◆ विशिष्ट सदस्य 121 ◆ फिक्स डिपोजिट 51,50,000 रुपये

राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार अखिल भारतीय समिति के सम्मानित सदस्यों के बीच अपनी रपट प्रस्तुत करते हुए।

नवगठित अखिल भारतीय समिति के सम्मानित सदस्यों का मैं हार्दिक अभिनन्दन करते हुए उन्हें शुभकामनाएँ देता हूँ एवं आगत सभी सदस्यों एवं आमंत्रित सदस्यों का भी स्वागत करते हुए मैं सम्मेलन द्वारा गत अखिल भारतीय समिति की बैठक के बाद हुए कार्यों का ब्यौरा रख रहा हूँ।

दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में दिनांक २०–२१ दिसम्बर, २००८ को दिल्ली में हुए २१वें साधारण अधिवेशन में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने भार ग्रहण किया एवं मुझे महामंत्री का भार सौंपा। तत्पश्चात अखिल भारतीय समिति की प्रथम बैठक उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में संबलपुर में १ फरवरी २००९ को सम्पन्न हुई जिसका कार्यवृत्त आपके सामने अभी–अभी प्रस्तुत किया जा चुका है।

दिनांक १ फरवरी २००९ के बाद के सम्मेलन कार्यों की रपट मैं आपके सम्मुख रख रहा हूँ। अखिल भारतीय समिति की प्रथम बैठक में अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा को मिले अधिकार के अन्तर्गत राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति का गठन किया गया। राष्ट्रीय कार्यकारिणी की प्रथम बैठक २ मार्च २००९ को कोलकाता चेम्बर ऑफ कॉमर्स हाल में सम्पन्न हुई। बैठक में केन्द्रीय कार्यालय की मरम्मत कराने का निर्णय लिया गया। सम्मेलन की स्थायी समिति का गठन किया गया। भावी कार्यक्रम के अन्तर्गत अध्यक्षजी के प्रस्ताव पर सम्मेलन एवं समाज के सर्वांगीण विकास के लिए कुछ निर्णय लिये गये।

1. संगठन–सदस्य संख्या एवं शाखाएँ बढ़ाई जाए।
2. राजस्थानी भाषा पर विचार–विमर्श किया जाए।
3. सामाजिक समरसता पर विचार–विमर्श कर ठोस एवं प्रभावशाली कार्यक्रम हाथ में लिया जाए।
4. उच्च शिक्षा के लिये समाज में इसका प्रचार हो और सुविधा प्रदान की जाए।
5. समाज में राजनैतिक चेतना जागृत की जाए।

जहाँ तक सदस्य संख्या का प्रश्न है आपको जानकर खुशी होगी कि अध्यक्षजी की अपील पर सभा के मध्य ही कुछ सदस्यों ने संरक्षक सदस्य बनने का तुरन्त आश्वासन दिया एवं अब तक संरक्षक सदस्य १०७, आजीवन सदस्य ८३, विशिष्ट सदस्य १२१ बन गये हैं एवं ५१,५०,००० लाख रुपये बैंक में फिक्स डिपोजिट कर दिए गए हैं।

किसी भी समाज के लिये उसकी मातृ भाषा का महत्व सबसे अधिक होता है। इस संदर्भ में समाज विकास के जुलाई अंक में राजस्थानी शब्द कोष के कुछ प्रचलित शब्दों को उनके अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशन किया गया है एवं समाज विकास के माध्यम से भाषा के प्रचार प्रसार का निरन्तर प्रयास किया जा रहा है। सामाजिक समरसता के अर्न्तगत दो गोष्ठियों का आयोजन

''अन्तर्जातीय विवाह, कुछ अनुभव'' पर एक गोष्ठी

किया गया है। गत दिनांक ११ जुलाई २००९ को **''अन्तर्जातीय विवाह, कुछ अनुभव''** पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें अपने ही समाज के दो जोड़ों ने अपने अनुभवों पर प्रकाश डाला। दिनांक २२ अगस्त २००९ को सेठ सूरजमल जालान बालिका विद्यालय में ''उभरती प्रतिभाएं–गिरते मूल्य, किसको श्रेय, कौन दोषी'' विषय पर गोष्ठी की गयी जिसमें छात्राओं तथा प्रधानाध्यापक एवं शिक्षिका ने अपने विचार प्रकट किए। गोष्ठी में विद्यालय के अध्यक्ष श्री तोलाराम जालान, उपाध्यक्ष श्री बजरंग जालान एवं सचिव श्री नन्दलाल सिंहानिया सहित सम्मेलन के पदाधिकारी उपस्थित थे।

उच्च शिक्षा समिति का गठन हो गया है जिसका अध्यक्ष पद श्री प्रहलादरायजी अग्रवाल ने स्वीकृत किया है। अभी हमारे पास उच्च शिक्षा के लिये अनुदान अथवा लोन के लिये ३ आवेदन आ गये हैं। सब कमिटि की मीटिंग में इस पर विचार किया जायेगा।

राजनैतिक चेतना समिति का भी गठन कर दिया गया है। जिसके अध्यक्ष श्री जुगल किशोरजी जैथलिया हैं। उनसे हमारा निरन्तर सम्पर्क है। हमें आशा है कि नवम्बर – दिसम्बर, २००९ में कोलकाता में राजनैतिक चेतना सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा। उपयुक्त उपसमितियों के अलावा परामर्शदात्री समिति, भवन निर्माण समिति, सदस्यता बर्द्धन समिति, राजस्थानी भाषा प्रचार समिति, सामाजिक समरसता समिति, डायरेक्टरी प्रकाशन समिति, कौस्तुभ जयंती समिति का गठन किया जा चुका है। राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा मारवाड़ी सम्मेलन फाउन्डेशन के ट्रस्टी के लिये पश्चिम से डॉ. जयप्रकाश मूधड़ा (मुंबई) तथा पूर्व से श्री रामदयाल मस्करा (बिहार) को तथा अध्यक्षजी को दिये गये भार के अनुसार श्री ओंकारमल अग्रवाल (गुवाहाटी) को मनोनित किया गया है।

राष्ट्रीय कार्यालय की मरम्मत का काम शुरु किया गया था परन्तु मकान मालिक के व्यवधान के कारण उसे रोकना पड़ा। मकान मालिक भाड़ा बहुत ज्यादा बढ़ाने पर जोर दे रहा है। कानूनन रास्ता निकालने पर विचार किया जा रहा है।

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन की प्रान्तीय बैठक दिनांक ८ फरवरी २००९ को आयोजित हुई उस बैठक में नये पदाधिकारियों की घोषणा की गई। डॉ. श्याम सुन्दर हरलालका को अध्यक्ष चुना गया।

मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन की प्रान्तीय बैठक दिनांक १० फरवरी २००९ को आयोजित हुई उसमें श्री अरुणकांत अग्रवाल को अध्यक्ष चुना गया।

मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन १९ दिसम्बर से २३ दिसम्बर २००९ तक पांच दिवसीय रंग–रंगीलो राजस्थान मारवाड़ी महोत्सव मना रहे हैं।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का २६वां अधिवेशन २१–२२ मार्च को पटना में सम्पन्न हुआ। नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री कमल नोपानी ने पदभार ग्रहण किया। इस मौके पर सम्मेलन के पदाधिकारियों में सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूंगटा, उपाध्यक्ष श्री बद्रीप्रसाद भीमसरिया, महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, संयुक्त महामंत्री श्री ओमप्रकाश पोद्दार एवं श्री संजय हरलालका अधिवेशन में उपस्थित थे।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा होली प्रीति सम्मेलन के साथ रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं राजस्थानी लोक गीतों की एक सुरमई संध्या का आयोजन किया गया। उसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा, निवर्तमान अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार मंच पर उपस्थित थे।

दिनांक २० मार्च २००९ को स्थाई समिति की प्रथम बैठक हुई। जिसमें निर्णय लिया गया कि समाज सुधार पर गोष्ठियाँ की जाए। उसके अन्तर्गत दो गोष्ठियों का आयोजन हुआ उसका विवरण पहले किया जा चुका है।

१९ जुलाई २००९ को **झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन** के प्रान्तीय सम्मेलन में अगले सत्र (२००९–११) के लिये श्री विनय कुमार सरावगी को अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है।

१९ अप्रैल २००९ को सम्मेलन की वार्षिक साधारण सभा सम्मेलन भवन में सम्पन्न हुई। उसी में वित्तीय वर्ष २००६–०७ तथा २००७–०८ का लेखा परीक्षक द्वारा जाँचा गया आय–व्यय का ब्योरा पारित किया गया एवं पी.के. लील्हा एण्ड कम्पनी को पुन: लेखा परीक्षक नियुक्त किया गया।

आयला प्रभावित क्षेत्र (पश्चिम बंगाल) में मानवीय सहायता के लिए राहत सामग्री भेजने का निर्णय लिया गया एवं निर्णय के अनुसार नमक, चिड़वा गुड़, कपड़े, छाता आदि भरकर दो ट्रकों में लोड राहत सामग्री को निवर्तमान अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने हरी झंडी दिखाकर भारत सेवाश्रम संघ के कैम्प (सुन्दरवन) के लिए रवाना किया।

स्थाई समिति की द्वितीय बैठक ३० मई ०९ को सम्मेलन भवन में हुई। इस बैठक में आयला प्रभावित क्षेत्र (पश्चिम बंगाल) में मानवीय सहायता के लिए राहत सामग्री भेजने का

दिनांक 4 जुलाई 09 को राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की द्वितीय बैठक कॉनक्लेभ हॉल में

निर्णय लिया गया एवं निर्णय के अनुसार नमक, चिड़वा गुड़, कपड़े, छाता आदि भरकर दो ट्रकों में लोड राहत सामग्री को निवर्तमान अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने हरी झंडी दिखाकर भारत सेवाश्रम संघ के कैम्प (सुन्दरवन) के लिए रवाना किया। जहां से आयला पीड़ित लोगों में बड़ी संख्या में वितरण किया गया।

सम्मेलन द्वारा महाराष्ट्र सरकार के खाद्य आपूर्ति मंत्री तथा **महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन** के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द गोपीकिशन बंग के कोलकाता आगमन पर सम्मान गोष्ठी का आयोजन किया गया।

दिनांक ४ जुलाई को राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की द्वितीय बैठक कॉनक्लेभ हॉल में सम्पन्न हुई। बैठक में अध्यक्ष ने बदलते समय के अनुसार सम्मेलन के संविधान संशोधन पर बल दिया, जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया एवं श्री नन्दलाल सिंघानिया की अध्यक्षता में संविधान संशोधन कमेटी का गठन किया गया एवं आगामी वर्ष सम्मेलन की **कौस्तुभ जयन्ती** मनाने पर चर्चा हुई। जिसकी रूपरेखा तय करने के लिए निवर्तमान अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाने का निर्णय लिया गया। कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने २००८–०९ का आय–व्यय का ब्यौरा, लेखा परीक्षक द्वारा जांचा हुआ प्रस्तुत किया। संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य द्वारा प्राप्त राशि को वैधानिक प्रावधान के अनुसार कोरपस फंड माना जाय एवम् उसको बैंक में फिक्स डिपोजिट में रखा जाय, यह तय हुआ।

दिनांक २६ जुलाई ०९ को अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा की अध्यक्षता में सम्मेलन की वार्षिक साधारण सभा की बैठक मर्चेन्ट चौम्बर ऑफ कामर्स में हुई। जिसमें २००८–०९ के आय–व्यय का ब्यौरा, लेखा परीक्षक द्वारा जांचा हुआ पारित किया गया एवम् लेखा परीक्षण के लिए पी.के. लिल्हा एण्ड कम्पनी को पुन: नियुक्त किया गया।

स्थाई समिति की तृतीय बैठक दिनांक ८ अगस्त २००९ को "वण्डर डेकर प्रा. लि." २, ब्रोर्बन रोड, कोलकाता–१ में अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूंगटा की अध्यक्षता में हुई। बैठक में सम्मेलन कार्यालय की मरम्मत करवाने में मकान मालिक द्वारा अड़चन पर विस्तार से चर्चा हुई। अन्त में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि कानूनी सलाह के अनुसार कार्यवाही की जाए। इसका भार श्री नन्दलाल सिंघानिया को दिया गया। सम्मेलन द्वारा सीधे तौर पर सेवामूलक कार्यक्रम करने को लेकर व्यापक विचार–विमर्श हुआ एवं निर्णय लिया गया कि एक मास के लिए सम्मेलन कार्यालय में नि:शुल्क आँख परीक्षण का कार्य किया जाए तथा जरुरतमंद लोगों को चश्मा दिया जाए तथा परीक्षण के दौरान जरुरतमंद लोगों का आँख का ऑपरेशन किया जाए। इसका भार राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री ओमप्रकाश पोद्दार को दिया गया।

दिनांक १५ अगस्त, २००९ को स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में सम्मेलन भवन में सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया द्वारा झंडोत्तोलन किया गया।

सम्मेलन की १३वें प्रान्त के रूप में **कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन** के नाम से कर्नाटक प्रादेशिक शाखा का ४ सितम्बर २००९ को गठन हो गया है जिसमें श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल अध्यक्ष तथा श्री देवेन्द्र सोमानी महामंत्री बनाये गये हैं।

६ सितम्बर २००९ को सम्मेलन के केन्द्रीय कार्यालय में प्रथम नि:शुल्क **आँख परीक्षण शिविर** लगाया गया जहाँ २७२ लोगों का नेत्र परीक्षण प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक डॉ. रजनी सराफ एवं उनकी टीम द्वारा किया गया। शिविर में ६० लोगों को नि:शुल्क दवा दी गई एवं ऑपरेशन योग्य पाये गये करीब ६० लोगों को ईसीजी, ब्लड सुगर तथा ब्लड प्रेशर जाँच कर उनके नि:शुल्क ऑपरेशन की व्यवस्था डॉ. रजनी सर्राफ के निजी नर्सिंग होम में की गई है। जहाँ गत सोमवार को ८ लोगों की आंखों का ऑपरेशन आईओएल माईक्रोसर्जरी पद्धति से हो चुका है। इसके अलावा चश्मा योग्य पाये गये १५० लोगों को आगामी १८ सितम्बर को नि:शुल्क चश्मा प्रदान किया जायेगा।

मुझे सदस्यों को बताते हुए खुशी हो रही है कि सम्मेलन भवन के पुनर्निर्माण सम्बन्धी कोलकाता कॉरपोरेशन में कार्यवाही में प्रगति हुई है एवं शीघ्र ही प्लान जमा होने की उम्मीद है।

मै पश्चिम बंगाल मारवाड़ी सम्मेलन को धन्यवाद देना चाहूंगा कि जिन्होंने आज की मीटिंग का आतिथ्य बहुत सुन्दर ढ़ंग से किया है। उनके कार्यकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं साल्टलेक सांस्कृत संसद भवन के पदाधिकारियों एवं उनके कार्यकर्ताओं के प्रति भी आभार प्रगट करना चाहूँगा।◆

अखिल भारतीय समिति की बैठक

समाज सुधार एक निरन्तर प्रक्रिया है

– सम्मेलन सभापति नन्दलाल रुँगटा

बायें से राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बद्रीप्रसाद भीमसरिया

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारक समिति अखिल भारतीय समिति के वर्तमान सत्र के नवनिर्वाचित सदस्यों की प्रथम बैठक पश्चिम बंगाल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में रविवार, १३ सितम्बर २००९ को भारतीय सांस्कृतिक संसद सभागार, कोलकाता में सुबह ११ बजे सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा की अध्यक्षता में हुई।

बैठक में सर्वप्रथम स्वागताध्यक्ष श्री नन्दकिशोर अग्रवाल ने सभी सदस्यों का स्वागत किया। प्रायोजक पश्चिम बंगाल मारवाड़ी सम्मेलन के सचिव श्री रामगोपाल बागला ने सभी राष्ट्रीय तथा प्रांतीय पदाधिकारियों का माल्यार्पण प्रदान कर स्वागत किया तथा पश्चिम बंगाल प्रान्त के कार्यों का विवरण दिया। तत्पश्चात बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों ने अपना परिचय दिया।

सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा ने सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए सुन्दर व्यवस्था के लिए पं. बंगाल मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया। श्री रुँगटा ने कहा कि हमारा समाज समाजसेवा के अलावा राजनीति में भी काफी सक्रिय होने लगा है। समाज का चहुँमुखी विकास हो रहा है। बावजूद इसके सम्मेलन अभी मजबूत नहीं हो पाया है। संगठन को सांगठनिक व आर्थिक रूप से और मजबूती प्रदान करने की जरूरत है। प्रत्येक मारवाड़ी परिवार से एक व्यक्ति को सम्मेलन से जुड़ना चाहिए। राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय स्तर पर एकल सदस्यता को जल्द से जल्द लागू किया जाये। आपने कहा कि सदस्यों की डायरेक्टरी प्रकाशन का कार्य शीघ्र शुरू होगा। आपने सभी सदस्यों से जल्द अपना बायोडाटा फोटो सहित भेजने का अनुरोध किया। आपने बताया कि सम्मेलन की सभी उपसमितियों का गठन हो चुका है। इन कमेटी के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के नाम समाज विकास के अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे। राजस्थानी भाषा के प्रचार–प्रसार पर बल देते हुए आपने कहा कि राजस्थानी हिन्दी–अंग्रेजी शब्दकोष के प्रकाशन की इच्छा है। राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने समिति की गत बैठक की कार्रवाई पढ़ी जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। महामंत्री ने गत १ फरवरी २००९ से अब तक हुए कार्यों का ब्यौरा रखते हुए बताया कि अब तक १०७ संरक्षक, ९१ आजीवन तथा १२१ विशिष्ट सदस्य बनाये गये हैं। आपने बताया कि सदस्यता से प्राप्त राशि में से ५१ लाख ५० हजार रुपयों को फिक्स डिपाजिट कराया जा चुका है। सम्मेलन की १३वीं शाखा के रूप में कर्नाटक शाखा खुलने की जानकारी देते हुए बताया कि सम्मेलन भवन का कार्य भी प्रगति पर है।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने वित्तिय वर्ष २००८–२००९ तक तथा अप्रैल २००९ से अगस्त २००९ तक का लेखा–जोखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि सम्मेलन की आर्थिक स्थिति सुधार की ओर है लेकिन अभी भी इस ओर और अधिक ध्यान देने की जरूरत है।

पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने **कौस्तुभ जयंती** मनाने के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि २५ दिसम्बर

महामंत्री ने गत 1 फरवरी 2009 से अब तक हुए कार्यों का ब्यौरा रखते हुए बताया कि अब तक 107 संरक्षक, 91 आजीवन तथा 121 विशिष्ट सदस्य बनाये गये हैं। आपने बताया कि सदस्यता से प्राप्त राशि में से 51 लाख 50 हजार रुपयों को फिक्स डिपाजिट कराया जा चुका है। सम्मेलन की 13वीं शाखा के रूप में कर्नाटक शाखा खुलने की जानकारी देते हुए बताया कि सम्मेलन भवन का कार्य भी प्रगति पर है।

२००९ से २५ दिसम्बर २०१० तक कौस्तुभ जयंती के कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। उन्होंने सभी सदस्यों से अपील की कि वे कौस्तुभ जयंती के दौरान आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रम लिखकर भेजें। आपने बताया कि कौस्तुभ वर्ष के दौरान राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल को आमंत्रित करने की योजना है। इस वर्ष में भवन का भूमि पूजन होकर वहां निर्माण कार्य शुरु हो। आपने बताया कि भवन निर्माण में लगभग तीन करोड़ की लागत आयेगी। कौस्तुभ वर्ष के दौरान इस राशि को एकत्रित करने का प्रयास होना चाहिए। सम्मेलन के ७५वें साल में संरक्षक एवं आजीवन सदस्यों से प्राप्त राशि ७५ लाख तक पहुँचे और इसको फिक्स डिपाजिट कराया जाय। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७५वें वर्ष में समाज के विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्तियों यथा उद्योग, साहित्य, खेल, कला, राजनीति के क्षेत्र में उल्लेखनीय अवदान देने वाले लोगों का राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान हो।

बैठक में उपस्थित अन्य सदस्यों के विचार इस प्रकार रहे :–

श्री जुगलकिशोर जैथलिया, कोलकाता : समाज का परिवेश बदल गया है। चाहकर भी हम परिवर्तन नहीं कर पा रहे हैं। हमें अपने प्रान्तों से वैवाहिक आचार संहिता शुरु करनी चाहिए। स्वसुधार के साथ समाज सुधार की पहल की जाए।

श्री हरिकिशन अग्रवाल, उड़ीसा : ऐसी बैठकों में सिर्फ नीति निर्धारण की बात की जाए जिससे समय का अपव्यय न हो।

श्री मंगतूराम अग्रवाल, उड़ीसा : विवाह–शादियों में फिजूलखर्ची पर प्रतिबंध लगे।

श्री संतोष अग्रवाल, उड़ीसा : मारवाड़ी युवा मंच में सदस्यों की उम्र की सीमा ४५ की बजाय ४० होनी चाहिए। बाद में वे सदस्य सम्मेलन से जुड़ें। सम्मेलन की शाखाओं का विस्तार होना चाहिए। जिन राज्यों में शाखाएं नहीं हैं वहां शाखा खोलने हेतु प्रयास हो।

श्री सूरजभान जैन, भवानीपटना : हमें घर तथा अन्य समारोहों में जूठन छोड़ने की आदत त्यागनी होगी। समाज के प्रत्येक परिवार को प्रति सदस्य एक रुपया सम्मेलन को देने का प्रस्ताव लेना होगा।

श्री अशोक तुलस्यान, मुंगेर : पहले हमें स्वयं को बदलना होगा तभी समाज बदलेगा। सम्मेलन को मजबूत करने के लिए पदाधिकारियों को दौरे करने चाहिए।

श्री रामअवतार पोद्दार, पटना : प्रान्तों के अध्यक्ष तथा मंत्रियों के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष तीन माह में एक मीटिंग करे और उन्हें आगामी तीन माह के कार्यक्रम दें। फिर तीन माह बाद सौंपे गये कार्यों की रिपोर्ट ले।

श्री शिव कुमार दूधवेवाला, पटना : हरदम चर्चा होती है किन्तु संगठन के नाम पर कोई प्रगति नहीं हुई है।

श्री ओम प्रकाश अग्रवाल, कोलकाता : हमें मारवाड़ी भाषा में बात करनी चाहिए। सभी मारवाड़ी परिवार को समाज विकास भेजा जाना चाहिए।

श्री मनोज अग्रवाल, कोलकाता : समाज में दिखावा बंद हो।

श्री नन्दलाल सिंहानिया, कोलकाता : समाज में फैली कुरीतियों का रूप बदल गया है। सम्मेलन के माध्यम से ऐसा कार्यक्रम लिया जाए कि सम्मेलन की समाज पर पकड़ हो। समाज में बढ़ रहे तलाक के मामलों को रोकना जरूरी है। सम्मेलन में मुकदमेबाजी नहीं होनी चाहिए।

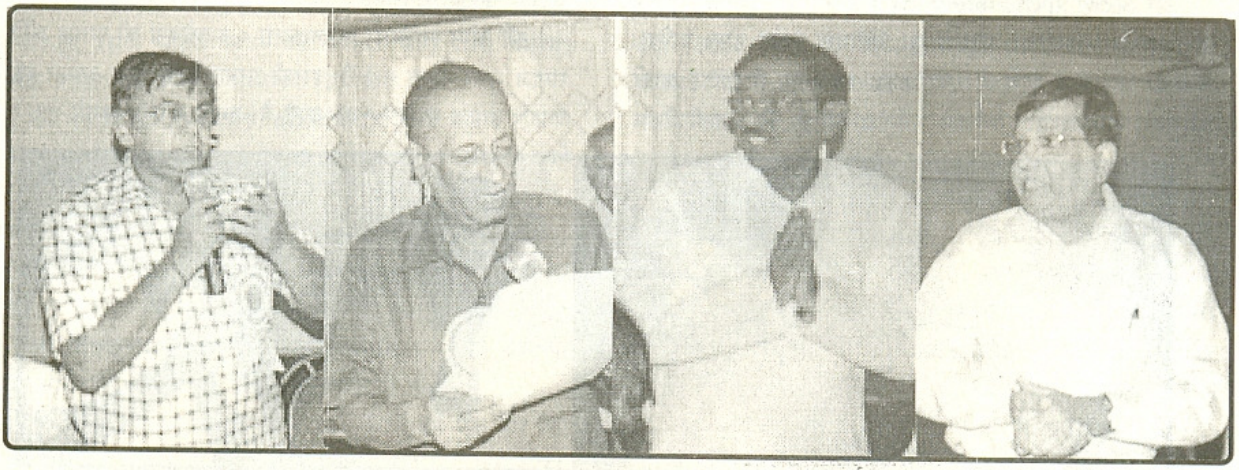

श्री शम्भु चौधरी, कोलकाता : सम्मेलन में मुकदमेबाजी करने वालों के खिलाफ अध्यक्ष रूलिंग दें।

श्री सीताराम शर्मा, कोलकाता : हमारे समाज की जातिगत संस्थाएं काफी सुदृढ़ हैं, उनसे सम्पर्क कर सुझाव लिये जाने चाहिए।

श्री विनोद अग्रवाल, राजमहल : कौस्तुभ जयंती वर्ष में हमें संकल्प लेना होगा कि यह साल हम समाज के लोगों के लिए सम्मेलन को देंगे। कौस्तुभ जयंती वर्ष में प्रत्येक प्रान्तों में माह में दो कार्यक्रम हों।

श्री जगदीश चन्द्र एन. मूंधड़ा, कोलकाता : संरक्षक सदस्यों की पत्नियों को भी पचास फीसदी राशि पर सदस्य बनाया जाये तो सदस्य संख्या बढ़ेगी।

श्री के.के. डोकानिया, कोलकाता : समाज के आर्थिक रूप से विपन्न लोगों को शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता दी जाए। एक यूनाईटेड फोरम होना चाहिए ताकि लगे कि हम संगठित हैं।

श्री राम प्रसाद भालोटिया, कोलकाता : गरीब कन्याओं की विवाह–शादी हेतु आगे आना चाहिए। समाज विकास में इसकी जानकारी दें।

श्री विश्वनाथ भादानी, कोलकाता : निज पर शासन, फिर अनुशासन। हमें पहले स्वयं में सुधार करना होगा।

श्री रामनिवास चोटिया, हावड़ा : हमें किसी भी समस्या का समाधान आपस में बैठकर करना चाहिए न कि अदालतों में जाकर।

श्री अरुण गुप्ता, कोलकाता : संस्था का पंजीकरण रिन्यू होना चाहिए। आजीवन सदस्यों का सीरियल नम्बर होना चाहिए। सम्मेलन के ७५वें साल में एक करोड़ रुपये का डिपाजिट कराने का लक्ष्य होना चाहिए। अखिल भारतीय समिति की अगली बैठक दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर के क्षेत्र में होनी चाहिए। सभी पदाधिकारी साल में कम से कम एक विज्ञापन समाज विकास में दें।

श्री बंशीलाल बाहेती, कोलकाता : सामाजिक संगठन भी बाजारवाद का शिकार हो गये हैं। सामाजिक संरक्षण, आर्थिक संरचना को बदलना होगा।

श्री बसंत कुमार मित्तल, रामगढ़ : इस बैठक से पूरे देश को दिशा–निर्देश जाना चाहिए ताकि प्रान्त कुछ कार्य कर सकें। कौस्तुभ जयंती में प्रत्येक प्रान्त को यह दायित्व दिया जाय कि वे कार्यक्रम हाथ में लें। प्रत्येक मारवाड़ी से एक–एक रुपया संग्रहित किया जाए, इससे सम्मेलन का आर्थिक पक्ष भी मजबूत होगा और जनगणना भी हो जायेगी। सभी प्रान्तों के अध्यक्ष तथा सचिव के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष बैठक करें और उन्हें प्रान्तों में काम करने का दायित्व दें।

श्री जमुना प्रसाद शर्मा, रामगढ़ : प्रत्येक राज्य के लिए प्रभारी नियुक्त करें। राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय स्तर के प्रत्येक पदाधिकारियों को २५ या ५० सदस्य बनाने के लिए बाध्यतामूलक किया जाए। समाज के प्रतिष्ठित सामाजिक व राजनैतिक लोगों की सूची सम्मेलन के पास होनी चाहिए।

श्री प्रकाश पसारी, चाईबासा : शादी–विवाह में फिजूलखर्ची के बारे में चर्चा तो होती है किन्तु समस्या कम होने की बजाय दिनों दिन बढ़ रही है। ऐसी बुराइयाँ ऊपर के या नीचे के तबके से आती हैं। सम्मेलन की तरफ से ४० व्यंजनों का प्रवाधान लागू हो। जो इसे तोड़े वहां लोग खाने की प्लेट न पकड़ें। अखिल भारतीय समिति की अगली बैठक चाईबासा में करने का प्रस्ताव रखा।

श्री ओम लड़िया, कोलकाता : आलोचना की परवाह करेंगे तो समाज सुधार संभव नहीं है। इसकी परवाह किए बिना आचार संहिता बनाएं। समाज में नेतृत्व की कमी है। हमारी कथनी–करनी एक होनी

सभी संस्थाओं को एक मंच पर लाने का कार्य सम्मेलन करे

चाहिए। बढ़ती महंगाई के मद्देनजर दहेज प्रथा पर अंकुश जरूरी है।

श्री बालकृष्ण माहेश्वरी, कोलकाता : जो बातें यहाँ हो रही हैं उनको कार्यान्वित किया जाना चाहिए। कौस्तुभ जयंती को वृहद् स्तर पर मनाया जाए।

श्री पुरुषोत्तम शर्मा, चाईबासा : अधिकाधिक लोगों को सम्मेलन से जोड़ने पर संगठन मजबूत होगा।

श्री विजय कुमार केडिया, संम्बलपुर : कौस्तुभ जयंती का कार्यक्रम प्रान्त व जिला स्तर तक पहुंचे। पदाधिकारी प्रान्तों का दौरा करें। उत्कल प्रान्त में अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र लाठ ने पिछले ६ माह में दौरा कर ३० नई शाखाएं खोली हैं।

श्री सुरेन्द्र लाठ, उड़ीसा : समिति की बैठक पूरे दिन की होनी चाहिए। समाज की सभी संस्थाओं को मारवाड़ी सम्मेलन में जोड़ा जाए। सभी संस्थाओं को एक मंच पर लाने का कार्य सम्मेलन करे। प्रत्येक शाखा कार्य करे यह देखना सम्मेलन की जिम्मेदारी है।

श्री गणेश प्रसाद कंदोई, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष : प्रत्येक साल एक–दो एजेंडे को लेकर चलें और उसी के अनुरूप वर्षव्यापी कार्यक्रम हों।

श्री बद्रीप्रसाद भीमसरिया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष : जो सर्वोत्तम विचार हो उस पर चिन्तन करना चाहिए। स्व: सुधार पर जोर दिया।

श्री रतन शाह, कोलकाता : आज हम एक कदम बढ़े हैं तो आने वाले दिनों में चार कदम बढ़ेंगे। संगठन को मजबूत कर सम्मेलन को सार्थक बनाना होगा। समाज सुधार पर काफी मतभेद है बावजूद इसके समाज सुधार की प्रक्रिया जारी रहनी चाहिए। प्रत्येक शाखा को केन्द्रीय सम्मेलन जिम्मेदारी दे।

श्री नन्दकिशोर अग्रवाल, कोलकाता : जिस समाज में हमने जन्म लिया है हम उसके ऋणी हैं अत: हमें समाज को मजबूत करने की दिशा में सोचना चाहिए। समाज में राजनैतिक चेतना लानी होगी। सम्मेलन को राममनोहर लोहिया की जन्मशतवर्षिकी मनानी चाहिए।

श्री लोकनाथ डोकानिया, कोलकाता : कार्यकर्ताओं पर ध्यान देने से समाज आगे बढ़ेगा।

श्री विश्वनाथ सिंहानिया, कोलकाता : राष्ट्रीय स्तर पर ऐसा कार्य करे जिसमें पूरे प्रान्त की भागीदारी हो।

श्री विजय गुजरवासिया, कोलकाता : आज हमें एक बार फिर सोचना होगा कि महाराज अग्रसेन के दिखाये गये मार्ग एक रुपैया, एक ईट पर चलने की कितनी जरूरत है। सम्मेलन के बैनर तले सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ अनेक आंदोलन हुए हैं, लेकिन बदलते समय के अनुसार अब हमें स्वयं को बदलना होगा और समाज के लिए कांटों का ताज पहनना होगा।

श्री कैलाशपति तोदी, हावड़ा : समाज से हमें बहुत अपेक्षा है किन्तु समाज की हमसे भी काफी अपेक्षाएं हैं। हमें कुछ ऐसे कार्य करने चाहिए कि समाज के लोग हमारे पास आयें, और कुछ सामाजिक समस्याएं दूर हो सकें।

श्री गोपी धुवालिया, कोलकाता : सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ लड़ाई को मारवाड़ी युवा मंच और महिला मंच के माध्यम से क्रियान्वित किया जाए।

श्री रामगोपाल बागला, कोलकाता : हमारी कथनी–करनी एक हो। फिजूलखर्ची रोकने का पालन कोई नहीं कर रहा है। घर में मारवाड़ी भाषा में हमें बात करनी चाहिए।

अन्त में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने सदस्यों के प्रस्तावों पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि समाज सुधार एक निरन्तर प्रक्रिया है। पहले पर्दा प्रथा, विधवा विवाह, बाल विवाह, बच्चों को शिक्षा न दिलाना आदि समस्याएं थीं। लेकिन आज नई समस्याएं सामने आई हैं। विवाह समारोह में मद्यपान, सड़कों पर नाच–गान, तलाक, परिवारों में टूटन, शादी विवाह में आडम्बर बढ़ रहा है। हमें इसके खिलाफ कदम उठाने होंगे। उन्होंने कहा कि मुझे तकलीफ होती है कि हम हर प्रान्त के सदस्यों को इस बैठक में आने की सूचना तथा निमंत्रण भेजते हैं। रहने–खाने की इतनी व्यवस्था करने के बावजूद मात्र दो–तीन प्रान्त से प्रतिनिधि आए हैं। यदि सभी प्रान्त के पदाधिकारी आते तो अधिक से अधिक विचार जानने का अवसर मिलता। आपने सभी प्रान्त के पदाधिकारियों से अनुरोध किया कि वे वहां के मारवाड़ी सांसद, विधायक, आईएएस, आईपीएस अधिकारियों की सूची सम्मेलन को भेजें ताकि उन्हें 'समाज विकास' पत्रिका भेजी जा सके। आपने अगली बैठक दो सेशन में करने पर सहमति जताई। **श्री केशरीकांत शर्मा** द्वारा बनाए गए १२ हजार शब्दों के राजस्थानी हिन्दी तथा अंग्रेजी शब्दकोष के प्रकाशन की इच्छा जताते हुए इसकी पाण्डुलिपि को राजस्थानी भाषा समिति को सौंपने की बात कही जो इसकी सार्थकता पर अपनी राय देगी।

अध्यक्ष को धन्यवाद के साथ बैठक समाप्त हुई।◆

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

२७२ लोगों का किया नेत्र परीक्षण

पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार, संयुक्त महामंत्री ओम प्रकाश पोद्दार, विधायक दिनेश बजाज, समाजसेवी श्री बनवारीलाल सोती, श्री जुगल किशोर जैथलिया, डॉ. रजनी सराफ एवं उनकी चिकित्सयीय टीम

रविवार, ६ सितम्बर २००९। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आज सम्मेलन के केन्द्रीय कार्यालय, १५२बी, महात्मा गांधी रोड, दो तल्ला, कोलकाता–७ में आयोजित नि:शुल्क नेत्र परीक्षण शिविर में २७२ लोगों का नि:शुल्क नेत्र परीक्षण किया गया। कार्यक्रम के संयोजक तथा संचालक संयुक्त महामंत्री ओम प्रकाश पोद्दार, पूर्व पार्षद ने बताया कि डॉ. रजनी सराफ एवं उनकी चिकित्सयीय टीम द्वारा ६० लोगों को नि:शुल्क दवा दी गई तथा १५० लोग चश्मा योग्य पाये गये जिन्हें नि:शुल्क चश्मा प्रदान किया जायेगा। ऑपरेशन योग्य पाये गये ६० लोगों की नि:शुल्क ईसीजी, ब्लड सुगर तथा ब्लड प्रेशर की जांच भी की गई जिनका नि:शुल्क ऑपरेशन सम्मेलन द्वारा डॉ. रजनी सराफ के निजी नर्सिंग होम में कराया जा रहा है जहाँ ८ लोगों का ऑपरेशन हो चुका है। संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री ओमप्रकाश पोद्दार ने बताया कि गत ६ सितम्बर को आयोजित नि:शुल्क नेत्र परीक्षण शिविर में आपरेशन योग्य पाये गये ६२ लोगों का नि:शुल्क आँख आपरेशन डॉ. रजनी सराफ

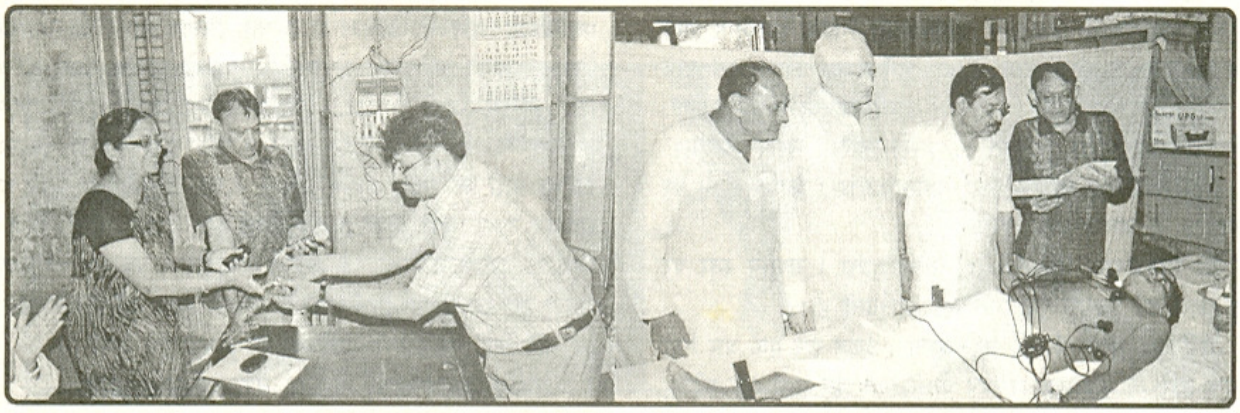

सम्मेलन ने बांटे १६० निःशुल्क चश्में

ने किया। जिन रोगियों की आंखों का आपरेशन हुआ उनमें से कई लोगों ने आज चश्मा वितरण के मौके पर आकर आंख के सम्बन्ध में अन्य जानकारियां हासिल की। निःशुल्क चश्मा देने हेतु श्री मदनचन्द सुराना ने ५१०० रुपये एवं श्री ओमप्रकाश अग्रवाल ने १६३० रुपये की राशि दी।

इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने की। उन्होंने कहा कि वैचारिक एवं सामाजिक समरसता के साथ–साथ सम्मेलन अब सेवा कार्यों के माध्यम से भी आम जन मानस से जुड़ेगा। विधायक दिनेश बजाज ने सम्मेलन के इस सेवा कार्य की सराहना करते हुए केन्द्रीय कार्यालय की मरम्मत हेतु विधायक कोटे से धन उपलब्ध करवाने की बात कही। उन्होंने कहा कि जनसेवा ही एक माध्यम है जिससे कोई भी संस्था सीधे तौर पर आम आदमी से जुड़ जाती है। राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार ने कहा कि हमें मरम्मत हेतु दानदाता से राशि प्राप्त हो चुकी है, कुछ अड़चनें हैं, जो दूर हो जायेंगी और कार्यालय की मरम्मत शीघ्र शुरु होगी। पार्षद सुनीता झंवर, किशन झंवर ने भी सम्मेलन को हर संभव मदद का आश्वासन दिया। धन्यवाद ज्ञापन संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री संजय हरलालका ने किया। इस मौके पर समाजसेवी श्री बनवारीलाल सोती, श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री रामनिवास चोटिया, श्री वासुदेव खेतान, श्री भगवती प्रसाद जालान, श्री रामचन्द्र बड़पोलिया, श्री विश्वनाथ सराफ, श्री ओम प्रकाश अग्रवाल, श्री कैलाशपति तोदी, श्री प्रेमचंद सुरोलिया सहित अन्य अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।◆

पश्चिम बंगीय मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा कोष

शिक्षा कोष ने छात्रों को बांटे यूनिफार्म

पश्चिम बंगीय मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा कोष ने श्री शंकर पाठशाला, राजा राममोहन राय विद्यालय के तकरीबन ३०० छात्रों को यूनिफार्म दिये। हावड़ा के कृष्ण भवन में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्घाटन समाजसेवी रामअवतार थर्ड ने किया। मुख्य अतिथि उद्योगपति रमेश नांगलिया थे। राजस्थान महिला संगठन की अध्यक्ष मधु शर्मा, समाजसेवी धरमपाल प्रेमराजका, जगदीश बेड़िया व बाबूलाल गुप्ता ने विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अतिथियों ने संस्था के प्रयासों की सराहना की। संयोजक सुरेश अग्रवाल ने अतिथियों के प्रति आभार जताया। प्रधान सचिव बाबूलाल अग्रवाल ने संस्था के उद्देश्यों और गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि संस्था शीघ्र ही सुन्दरवन में स्थित स्कूली छात्रों को यूनीफार्म देगी। उन्होंने बताया कि यह संस्था के लिए गौरव की बात है कि संस्था द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति से कई मेधावी छात्र डॉक्टर बने हैं। धन्यवाद ज्ञापन संयोजक कृष्णकुमार लोहिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए संयोजक घनश्याम शर्मा ने कहा कि इस तरह का आयोजन संस्था विगत सात वर्षो से कर रही है। कार्यक्रम के आयोजन में ओमप्रकाश फतेहपुरिया, ओमप्रकाश प्रेमराजका, शंकर पाठशाला के प्रधानाध्यापक लक्ष्मीचंद शर्मा सहित अन्य सक्रिय रहे।◆

कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का गठन

कर्नाटक प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन के समाज बन्धुओं व्यापारी एवं उद्योग व्यवसाय के बन्धुओं की बैठक दिनांक शुक्रवार ४ सितम्बर, २००९ को होटल ३इन में संध्या ५.०० बजे हुई।

इस अवसर पर **श्री नारायण प्रसादजी अग्रवाल** ने कहा कि समाज के सर्वांगीण विकास के लिए कर्नाटक राज्य में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की शाखा **कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन** का गठन किया जाए जिसकी अखिल भारतीय समिति द्वारा जारी नियमावली ही प्रादेशिक समिति की नियमावली होगी तथा अभी जो प्रादेशिक समिति कार्य समिति बनेगी वह तथर्थ समिति मानी जाएगी और तीन माह के अन्दर सभी जिलों और शाखा का दौरा कर वहां से नाम लेकर समिति का पूर्ण गठन कर लिया जाएगा। जिसका अधिक से अधिक कार्यकाल। एक साल का होगा तथा नया चुनाव इसी अवधि में करा लिया जाएगा। अभी इस प्रदेश में या जिला में सम्मेलन की कोई शाखा सभा नहीं है इसलिए कि किसी ईमारत को खड़ा करने से भी कठीन काम समाज सेवकों को जोड़कर संगठन खड़ा करने का काम होता है। दु:ख कि बात है कि कर्नाटक प्रदेश में अपार बड़ी संख्या में मारवाड़ी समाज होते हुए यहां कर्नाटक प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन का गठन नहीं हो सका जिसे हमें मजबुती के साथ लगकर संगठन खड़ा करना है। और हर जिले के शाखा ग्रामीण शाखा का संगठन तैयार करना है। जिसमें हर तरह के मारवाड़ी बन्धुओं को जोड़ना है सदस्य बनाना है। जिसका अनुमोदन सभी उपस्थित महानुभाओं ने करतल ध्वनी से किया।

इस अवसर पर निम्न प्रस्ताव पारित किए गए।

प्रस्ताव संख्या – 1

तदर्थ समिति के संयोजक सह अध्यक्ष पद के लिए श्री नारायण प्रसादजी अग्रवाल का नाम श्री नन्दलाल सोमाणी ने प्रस्तावित किया जिसका श्री संजय जालान ने अनुमोदन किया और करतल ध्वनी से अध्यक्ष पद पर श्री नारायण प्रसादज़ी अग्रवाल को सर्व सम्मति से चयन किया गया।

प्रस्ताव संख्या – 2

सर्व सम्मति से श्री देवेन्द्र कुमार सोनी को महामंत्री पद के लिए चयन किया गया।

प्रस्ताव संख्या – 3

सर्व समति से ११ कार्य समिति सदस्यों के रूम में निम्नलिखित व्यक्तियों को चुना गया जबकी यह संख्या ३१ सदस्यों की होगी जो सभी जिलों से शाखाओं से और प्रबंध समाज सेवियों संस्थाओं से सम्पर्क कर पूरा करने तथा ३ उपाध्यक्ष, २ मंत्री, ३ उपमंत्री, १ कोषाध्यक्ष तथा उपसमितियों के चयन करने का अधिकार सर्व सम्मति से अध्यक्ष महोदय को दे दिया गया।

अध्यक्ष, श्री नारायण प्रसादजी अग्रवाल
मेसर्स– भवानी माँ स्टोन
43/बी, प्रथम फेज जीगानी
जीगानी इण्डस्ट्रीयल एरिया, बंगलोर – 560105
मो. – +91 9334863158

महामंत्री, श्री देवेन्द्र कुमारजी सोनी
मेसर्स– प्रेस्टीज स्टोन इण्डिया प्रा.लि.
98/ई, द्वितीय फेज
जीगानी इण्डस्ट्रीयल एरिया
बंगलोर – 560105
मो. – +91 9845092587

सदस्य कार्यकारिणी समिति :–

श्री नन्दलाल सोमाणी
श्री ललित कुमार राठी
श्री जितेन्द्र कोठारी
श्री संजय जालान
श्री अनिल कुमार बंसल
श्री राजेश कुमार माहेश्वरी
श्री राजेश कुमार जैन
श्री आनन्द कुमार गिन्दोरिया
श्री संतोष गुप्ता
श्री महेश कुमार गुप्ता
श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा

प्रस्ताव संख्या – 4

आज की बैठक आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. वाई, एस राजशेखर रेड्डी के असामयिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करती है तथा २ मिनट का मौन रखकर उनकी आत्मा की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई तथा उन्हें नमन श्रद्धांजलि देकर सभा समाप्त की गयी।

सभा में उपस्थित सदस्यगण :–

श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल, श्री नटवर सिंह राज पुरोहित, श्री मनीष गोयल, श्री नन्दलाल सोमानी, श्री सुरेश कोठारी, अभय कोठारी, श्री प्रकाश चौधरी, श्री कैलाशचन्द अग्रवाल, श्री अशोक कुमार, श्री एच.बी. खण्डेलिया, श्री डी.सी. कोठारी, श्री जितेन्द्र हिंगर, श्री देवेन्द्र सोनी, श्री राजेश जैन, श्री विकास अग्रवाल, श्री संजय बाकसीवाल, श्री सतीश कुमार, श्री विनीत कोठारी, श्री विमल पाणिया, श्री ललित राठी, श्री हेमन्त गिरीया, श्री नील कमल, श्री एच.पी. गिन्दोरिया, श्री संजय सोनी, श्री प्रकाश अग्रवाल, श्री संजय जालान, श्री नरेश पारीक, श्री अशोक गोयल, श्री ओमप्रकाश शर्मा, श्री वीरसिंह, श्री वलवन्तराय, श्री राजेश माहेश्वरी, श्री जितेन्द्र कोठारी, श्री अनील बंसल, श्री संतोष गुप्ता, श्री महेश गुप्ता, श्री आनन्द कुमार गिन्दोरिया, श्री अजय अग्रवाल, श्री विनोद कुमार अग्रवाल, श्री शंकरलाल पारीक, श्री मुकेश वेदान्त, श्री रामअवतार शर्मा, श्री भागचन्द जैन, श्री वरूण सोमानी इत्यादि सदस्यों ने भाग लिया।◆

कवि परिचयः

हाइकुड़ा

१. बै 'सोरी' हाळा
ठल्लो हे घी दुळावै,
भीषण सभ्य!

२. आवो मायतां!
आपां देस नै चरां,
मोर्चो बणावां!

३. यूज अेण्ड थ्रो
के थारो, के म्हारो
जुग रो धारो!

४. कांओ मांडो हो?
मांड्योड़ा नै मिटावां—
कविजी हांस्या!

५. कैबत कोनी
अगर बा होवै तो
पोत आ पड़ै!

६. प्रेम सूं बुला
सिर कै बळ आस्यां
चणां भी खास्यां!

७. लाअिन कटी
हल्लो ही कोनी करै
भाभी नटगी!

८. रण जीत ले,
जण, कोनी जीत्यो जा
लो की लकीर!

९. अूभाणो आवै
जूती पैर'र जावै
जै सियाराम!

१०. 'बिरमचारी'
परकाया प्रवेश!
जै सियाराम!

केसरीकांत शर्मा 'केसरी'

कवि, कथाकार, औपन्यासिक, समालोचक, अनुवादक, फीचर—राइटर, स्तंभकार, पत्रकार।

पिता का नाम : स्व. मनोहरलाल शर्मा।

जन्म : १० मई १९४० (ननिहाल, फतेहपुर शेखावाटी में)।

शिक्षा : प्राथमिक शिक्षा एवं इन्टर आर्टस् (१९६१) फतेहपुर शेखावाटी से एवं बी.ए. कोलकाता से।

लेखन : राजस्थानी एवं हिन्दी में।

प्रकाशित काव्य कृतियां : केसरी की कविताएं (१९७५), संकेत (१९८०) एवं पड़ूतर/प्रत्युत्तर (१९८९) राज. + पड़बिंब+ कठै तो सोचो!

अनुवाद : विभिन्न पत्रों में स्तंभकार के रूप में, दैनिक सन्मार्ग, छपते—छपते, सेवा संसार (कोलकाता), पूर्वांचल प्रहरी दैनिक, साप्ताहिक सप्तसेतु (गुवाहाटी) वगैरह में नियमित लेखन।

सम्पर्क : आनन्दपुरा, वार्ड नं. 01
पोस्ट : मण्डावा – 333704, जिला : झुंझुनूं (राज.)
मोबाईल : 09413924795 / 09799486482

दोय कुंडळियां

पायी चोखी चाकरी, बण घाणी को बैल।
आंख्यां पाटी बांधकर, घूम—घूम तूं छैल।
घूम—घूम तूं छैल, भयंकर बंधन पायो।
मस्त होयगो पस्त, अस्त हो जोबन धायो।
काया होगी खीण, करम स्यूं छुट्टी पाई।
खोदी क्यूं ना घास, चाकरी चोखी पाई।।१।।
भवस बतावै गांव को, खुद की कठै पिछाण।
पोथी—पाना खोल कर, मूंडै खूब जहांन।
मूंडै खूब जहांन, दसा करड़ी बतळावै।
करणो पड़सी दान, जोर कोया मटकावै।
गर चावै तूं चैन, तो पूज इणां नै अवस।
खाकर होसी शान्त, चमकसी सांवठो भवस।।२।।

चूंगट्यो

बै औरां नै
खुवार खाता
अै
रुवार खावै,
'पांच सितारां' में
आवै—जावै!
नागनाथ
सांपनाथ
बिच्छु भाई
कंसळो कसाई
अेक थेली रा चट्टा—बट्टा
सै हट्टा—कट्टा,
अरे सींकिया
जासी कठै
अठीनै कुओ
बठीनै कुओ
बठीनै खाई
काटी कार बिलाई! ◆

दूहा

सोच—समझकर झांकिये,
धुरी ना'र की याहऽ।
करड़ो बैठ्यो केहरी,
के करसी बो साहऽ।।१।।
बड़ चाहे तूं कंदरा,
चोढ़ भलाई पहाड़।
धड़ पर कोन्या नाड़,
काळ कारगिल केसिया।।२।।
मगरां में बटका भरै,
चापलूसियो यार।
मूंडो देख्यो धरम नहिं
लंपट जरंत गवार।।३।।
पारस नै कद परसियो,
संत श्रेष्ठ रैदास।
बिन स्रम ठाडी संपदा,
संत भोग में खास।।४।।
माफी मांग्या पण घटै,
बढ़ै बैर संभार।
आंटीलो आचार
आग उछाळै केसिया।।५।।

सम्मेलन के नये संरक्षक सदस्य

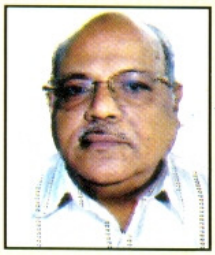

संरक्षक सदस्य संख्या – १०५
नाम : तोदी फाउण्डेशन
प्रतिनिधि : श्री श्रवण कुमार तोदी
पद : ट्रस्टी
कार्यालय का पता :
''श्राची टावर''
आठवाँ तल्ला, ६८६, आनन्दपुर, ई.एम.बाई–पास
कोलकाता – ७०० १०७
दूरभाष : (०३३) ३९८४३९८४
फैक्स : (०३३) ३९८४४२११
मोबाईल : ०९८३०७८३०००
ई–मेल : sktodi@shrachi.com

संरक्षक सदस्य संख्या – १०६
नाम : श्री राजेन्द्र कुमार बच्छावत
पत्नी का नाम : श्रीमती सरोज बच्छावत
पिता का नाम : स्व. झूमरमलजी बच्छावत
कार्यालय का पता :
११/१, शरद बोस रोड
कोलकाता – ७०० ०२०
दूरभाष : (०३३) २२८३२५९४
फैक्स : (०३३) २२८३७४९७
मोबाईल : ०९८३११८५४७६
ई–मेल :
निवास का पता :
२ए, विक्टोरिया टैरेस
कोलकाता – ७०० ०१७

संरक्षक सदस्य संख्या – १०७
नाम : श्याम स्टील इन्डस्ट्रीज लि.
प्रतिनिधि : श्री श्याम सुन्दर बेरीवाल
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
ईएन–३२, साल्ट लेक सिटी, सेक्टर V,
कोलकाता– ७०० ०९१
दूरभाष : (०३३) ४००७४००७
फैक्स : (०३३) ४००७४०१०
मोबाईल : ०९८३१०१२३७४
ई–मेल : sri@shyamsteel.com
निवास का पता :
सीई–१०८, साल्ट लेक सिटी
कोलकाता– ७०० ०६४

संरक्षक सदस्य संख्या – १०८
नाम : एलेक्सी कामर्शियल प्रा.लि.
प्रतिनिधि : श्री सुशील कुमार केडिया
पद : चेयरमैन
कार्यालय का पता :
१६०, देवाशीष काम्पलेक्स, द्वितीय तल्ला
जोन–१, एम.पी. नगर, भोपाल – ४६२०११ (म.प्र.)
दूरभाष : (०७७५) ४२५२८०७
फैक्स : (०७७५) २५५०६०४
मोबाईल : ०९४२५६०११९९
ई–मेल : alexcy_mail@yahoo.co.in
निवास का पता :
ई–५/९१, अरेरा कालोनी
भोपाल – ४६२०१६ (म.प्र.)

संरक्षक सदस्य संख्या – १०९
नाम : श्याम डी पावर लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री बृज भूषन अग्रवाल
पद : VCMD
कार्यालय का पता :
विश्वकर्मा, प्रथम तल्ला
८६–सी, तपसिया रोड
कोलकाता – ७०० ०४६
दूरभाष : (०३३) ४०११३०००/२२८५२२१०
फैक्स : (०३३) २२८५२२१२
मोबाईल : ०९८३००७७१६५
ई–मेल : bhusheshyamgroup.com
निवास का पता :
३बी, अशोका रोड
कोलकाता – ७०० ०२७

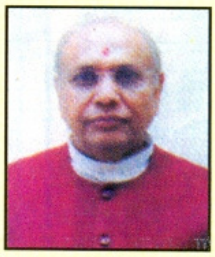

संरक्षक सदस्य संख्या – ११०
नाम : बद्रीप्रसाद चम्पालाल सरावगी चेरिटेबल ट्रस्ट
प्रतिनिधि : श्री चम्पालाल सरावगी
पद : ट्रस्टी
कार्यालय का पता :
९७, पार्क स्ट्रीट, ग्राउण्ड फ्लोर
कोलकाता – ७०० ०१६
दूरभाष : (०३३) ४००११०३१
फैक्स : (०३३) ४००११०५१
मोबाईल : ०९८३१०५२२६१
निवास का पता :
६ए, शार्ट स्ट्रीट
कोलकाता – ७०० ०१६

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

Over-night travel bag worth Rs. 360/-
OR
Books with every 1 year subscription

Travel bag + Books worth Rs. 1080/-

OR

Books worth Rs. 1080/- with every 3 years subscription

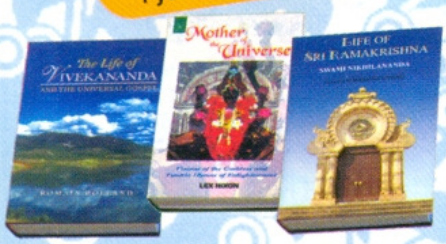

Business Economics — Subscription Form

Yes! I would like to subscribe Business Economics

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	Gift Option
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	☐ Travel Bag + Books **OR** ☐ Books
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	☐ Over-night Travel Bag **OR** ☐ Books

Name : Mr./Ms. _____

Address : _____

_____ City / District : _____

State : _____ Country : _____ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : _____ Mobile : _____ Landline : _____ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. _____ dated : _____ for Rs. _____ drawn on : _____

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature : _____ date : _____

Mail your Cheque / DD to : Mr. Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact :

Kolkata : Ms. Sumita Agarwal : 033 2223-0368 • **New Delhi :** Lala P. Yadav : 98102 10095
Chennai : Ms. S. Bhuvaneshwari : 98416 54257 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 00860

कवि परिचय:

बनेचंद मालू

जन्म : 20 मई, 1939 श्रीडूंगरगढ़ (राजस्थान)
शिक्षा : चार्टर्ड एकाउंटेंट

कर्म और सृजन : १९६४ से एक प्रतिष्ठित औद्योगिक संस्थान आर.पी. जी. एंटरप्राइज में लगभग चार दशक तक उच्चाधिकारी रहे। कई सामाजिक संस्थाओं से सक्रियता से संलग्न। बाल्यावस्था से ही नाटक आदि में भाग लेने का शौक रहा।

तुकबंदी का शौक भी बचपन से ही रहा है जो शनैःशनैः काव्य रचना में परिणत होता गया।

राष्ट्रकवि सम्मेलनों में कोलकाता एवं मुंबई में आमंत्रित एवं शामिल। अन्य कई काव्य गोष्ठियों में सहभागिता। कोलकाता में जनप्रिय दैनिक पत्र विश्वमित्र एवं सन्मार्ग तथा कई अन्य पत्रिकाओं में बराबर कविताएं प्रकाशित। भारतीय संस्कृति के प्रतिपूर्ण लगाव एवं निष्ठा, जो कविताओं में पूर्ण रूप से झलकता है।

संपर्क : 5–बी, श्रीनिकेत, 11, अशोका रोड, अलीपुर, कोलकाता – 700027
मोबाइल : 09831212077

ऊँची उड़ान

ऊंचे–ऊंचे नील गगन में
मंद मंद मदमस्त पवन में,
लहराते कजरारे बादल।
इठलाते बलखाते।
मनमोहक दृश्य मन भाया
इक चिड़िया का मन ललचाया।
बादल पर जाकर बैठूँ मैं
फुदक–फुदक इतराऊँ ऐंठूं मैं।
ठान यही उड़ान भराई,
मन में बड़ी उमंग समाई।
पंख फैलाये, शक्ति लगाई,
पर बादल तक पहुँच न पाई
इधर–उधर और ऊपर नीचे
उड़ी जा रही बादल के पीछे।
नहीं राह में कहीं सुस्ताई,
पर बादल तक पहुँच न पाई।
थक कर चकनाचूर हो गयी
रुकने को मजबूर हो गयी।
पर रुकने का कोई स्थान नहीं था,
वापस आना भी आसान नहीं था।
गश खा कर गिर पड़ी धरा पर,
अर्ध अचेतन मरी बराबर।
असंभव सा जो लक्ष्य बनाते
जीना–जीना चढना नहीं चाहते
मिथ्या बल का स्वांग रचाते
सीधी ऊँची छलांग लगाते।
अक्सर गश खा कर गिर जाते।

मैं सोचता बहुत हूँ

सोचना मेरी आदत है।
यह भी सोचता हूं
जो नहीं सोचते उनको लानत है।
मस्तिष्क इसीलिए तो होता है
कि चिंतन करो, मनन करो।
सोच कर
नये विचारों का सृजन करो।
आज ही सोच रहा था,
मानवता में मैं कितना ऊँचा हूँ।
लोग तो पता नहीं कहाँ रह गये,
मैं कितना आगे पहुँचा हूँ।
कुछेक नमूने यहाँ देता हूँ।
उन पर आपकी भी राय लेता हूँ।
उस दिन मुन्ने के हाथ से
काँच की फूलदानी टूट गयी।
इम्पोर्टेड क्रिस्टल की थी,
हाथ से छूट गयी।
मन में आया मुन्ने के तो
कहीं चोट नहीं लग गयी।
फूलदानी तो और आ जायेगी,
गयी सो गयी।
आज आज–
रामू का पैर फिसल गया,
पानी का गिलास टूट गया।
मेरे मुँह से तुरन्त निकला–
देख के नहीं चलता?
क्या आंखें फूट गई?
प्रात: भ्रमण से आकर
आराम कुर्सी में धंस गया
जैसे कंकड़ गुलैल में
सही फँस गया।
ग्रीष्म काल था,
गर्मी के मारे बुरा हाल था।
चाय की चुस्की के साथ
अखबार के पन्ने पलट रहा था।
शीर्षक पढ़–पढ़कर
जल्दी से सलट रहा था।
रामू आया।
झाड़ू निकालने के लिए
पंखा बन्द करवाया।
झाड़ू निकालने में
तीन मिनट लग गये।
मेरे ललाट पर
स्वेद बिन्दु झलक गये।
इस बीच उसे तीन बार डांटा।
मन किया लगाऊँ एक चांटा।
कितनी देर लगाता है,
क्या रोटी नहीं खाता है।
मुझे पता चला मुन्ना हमउम्र
माली के लड़के के साथ खेलता है।
और हाँ, उसके साथ खेल–खेल में
कटी घास से भरी गाड़ी भी ठेलता है।
माली को बुलाकर,
आड़े हाथों लिया,
तुमने अपने लड़के को
मुन्ने के साथ खेलने दिया?
छोटे बड़े का कुछ भी
विचार नहीं किया?
खबरदार
आगे से यदि ऐसा किया।
मेरी मानवता के ऐसे
कई उदाहरण हैं।
फिर भी मुझे
नोबल पुरस्कार नहीं मिला,
पता नहीं क्या कारण है। ◆

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : **श्री कमलेश कुमार विजय**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– हावड़ा ट्रेडिंग क. प्रा.लि.
बेल्स हाउस, १०वां तल्ला
२१, कैमेक स्ट्रीट, कोलकाता – १६
मोबाईल नं.–०९८३०३७७२३४

नाम : **श्री चन्दूलाल अग्रवाल**
कार्यालय का पता :
बी.ई.–३४१, साल्ट लेक सिटी
कोलकाता–७०००६४
मोबाईल नं.–०९४३२३२५१६३
०९४३३२०६०५३

नाम : **श्री कैलाश चन्द्र अग्रवाल**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– के. अग्रवाल एण्ड कं.
३४, इजरा स्ट्रीट, दूसरा तल्ला
कोलकाता–७००००१
मोबाईल नं.–०९३३११४७३९४

नाम : **श्री सुरेन्द्र कुमार कानोड़िया**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– एस.के. कानोड़िया एण्ड कं.
४२/१, बी.बी. गांगुली स्ट्रीट
दूसरा तल्ला, कोलकाता–७०००१२
मोबाईल नं.–०९८३१०६७६५४

नाम : **श्री निर्मल कानोड़िया**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– न्यू मिलेनियम इन्फोटेक
७/१, शरत बोस रोड
कोलकाता – ७०० ०२०
मोबाईल नं.–०९८३००२१३१४

नाम : **श्री सुरेश गुप्ता**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– काली ट्रांसपोर्ट प्राइवेट लि.
३३/१, नेताजी सुभाष रोड
८३५, मार्शल हाउस
कोलकाता–७००००१
मोबाईल नं.–९८३१०२३४५६

नाम : **श्री सुभाष कुमार सोंथलिया**
कार्यालय का पता :
सुरेश कुमार रमेश कुमार
१९२, जमुनालाल बजाज स्ट्रीट
कोलकाता–७०० ००७
मोबाईल – ०९८३००४६८२३

नाम : **श्री कृष्ण कानोड़िया**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– लेनको इण्डस्ट्रीज लि.
श्री कालाहस्ती मंडल
पो.–राचागुनेरी, जिला–चित्तौड़, आ.प्र.
मोबाईल नं.– ०९८४९६४६४०९

नाम : **श्री नीलमणि भरतिया**
निवास का पता :
डी–२०३ एवं २०४, विंडसर पैलेस
६ए, आयरन साइड रोड, बालीगंज
कोलकाता – ७०००१९
मोबाईल नं.–०९८३१२१८६३१

नाम : **श्री महेश कुमार केजरीवाल**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– परिजात व्यापार प्रा.लि.
१२ए, नेताजी सुभाष रोड, पांचवां तल्ला
रू. नं.–१२, कोलकाता–७००००१
मोबाईल नं.– ०९८३०३५८५९७

नाम : **श्री शिव रतन जोशी**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– जगदम्बा मोटर्स
सदर बाजार, चाईबासा – ८३३२०१
जिला–प. सिंहभूम (झारखण्ड)
मोबाईल नं.–०९४३१११०१४५

नाम : **श्री केशव झुनझुनवाला**
कार्यालय का पता :
२१४, चित्तरंजन एवेन्यू
कोलकाता – ७०० ००६
दूरभाष – (०३३) २२४१ २५१७

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : श्री सुनीत कुमार तोदी
कार्यालय का पता :
मेसर्स– एस.के.टी.इनफ्राप्रोजेक्ट्स प्रा.लि.
ए–१, सन सृष्टि कॉम्प्लेक्स
साकी विहार रोड, अंधेरी इस्ट
मुम्बई–४०००७२
मोबाईल – ०९८३३०९९६७७

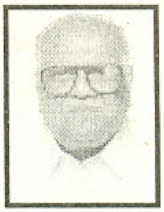

नाम : श्री ओमप्रकाश झुनझुनवाला
कार्यालय का पता :
५४३, रविन्द्र सरणी
कोलकाता – ७०० ००३

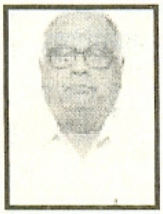

नाम : श्री राधेश्याम झुनझुनवाला
कार्यालय का पता :
५४३, रविन्द्र सरणी
कोलकाता – ७०० ००३
दूरभाष – (०३३) २५५४४३५४

नाम : श्री श्याम सुन्दर पोद्दार
कार्यालय का पता :
उड़ीसा प्लास्टो पाइप्स प्रा.लि.
बी–३२ एवं ३३, न्यू इन्डस्ट्रीयल इस्टेट
जगतपुर – ७५४०२१, कटक, उड़ीसा
मोबाईल नं.– ०९८६१०१३१५५

नाम : श्री विनीत रुइया
कार्यालय का पता :
३०७ एवं ३०८ नारायणी बिल्डिंग
२७, ब्रबर्न रोड
कोलकाता – ७०० ००१
दूरभाष – (०३३) २२१३५५५६

नाम : श्री विजय कुमार सुल्तानिया
कार्यालय का पता :
श्री बिहारीजी डिस्ट्रीब्यूटर प्रा.लि.
सदर बाजार, चाईबासा
प. सिंहभूम, झारखण्ड
मोबाईल – ०९४३१११०२३५

सम्मेलन के नये विशिष्ट सदस्यों का स्वागत

नाम : श्री महेश महिपाल
कार्यालय का पता :
१९, आरमेनियम स्ट्रीट
कोलकाता – ७०० ००७
मोबाईल नं.– ०९८८३०६१७१९

नाम : श्रीमती करुणा महिपाल
निवास का पता :
'शिवांचल अपार्टमेन्ट'
१८१/३, कैनल स्ट्रीट (लेकटाउन)
दो तल्ला, कोलकाता – ७०० ०४८
मोबाईल नं.–९८३०५०६३७३

नाम : श्री विनोद कुमार गोयल
कार्यालय का पता :
मेसर्स– गोयल टेक्सटाइल्स
१३/४, सैयद सालो लेन
तीसरा तल्ला, कोलकाता – ७००००७
मोबाईल नं.–०९८३३०८२५२३

नाम : श्री विनीत खेमका
कार्यालय का पता :
ज्योति मार्केटिंग
७ए, बेंटिक स्ट्रीट, तीसरा तल्ला
रूम. नं. – ३०४, कोलकाता–१
मोबाईल नं.–०९८३००८०८१२

नाम : श्री सांवरमल अग्रवाल
कार्यालय का पता :
मेसर्स– ७३, बड़तल्ला स्ट्रीट
कोलकाता–७०००००७
मोबाईल नं.–०९८३१०७३२३१

नाम : श्री सुनिल कुमार रुँगटा
कार्यालय का पता :
डीलक्स ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन
नेशनल हाइवे नं. – ५
कटक – ७५३००३
मोबाईल नं.–०९३३७२७४९७९

१७४८ वोटों से गांधी समर्थकों द्वारा पराजित कर दिया गया। चित्तरंजन दास ने कांग्रेस अध्यक्ष से इस्तीफा देकर मोतीलाल नेहरू के साथ मिलकर स्वराज्य पार्टी का गठन किया। टैगोर असहयोग आन्दोलन के पक्षधर नहीं थे उन्होंने इसकी जमकर आलोचना भी की। सी.एफ. एन्ड्रुज ६ सितम्बर १९२१ को जोड़ासांकू स्थित टैगोर के निवास स्थान पर गांधी–टैगोर की बैठक आयोजित करते हैं। बैठक असफल रहती है। एन्ड्रुज के अनुसार ''खादी एवं असहयोग आन्दोलन विषयों पर इतने गहरे मतभेद हैं कि एकमत संभव नहीं, हालांकि मित्रता बरकरार है।''

१९३६–३७ के आसपास भारत के प्राय: सभी प्रान्तों में कांग्रेस की सरकार थी, सिवाय बंगाल के। बंगाल में कांग्रेस की बागडोर सुभाष चन्द्र बोस के हाथ में थी। १९३९ में सुभाष बोस के कांग्रेस अध्यक्ष के पुनर्निर्वाचन का गांधीजी ने खुलकर विरोध करते हुए डॉ. भोगराजू पट्टाभी सीतारमैय्या का समर्थन किया। सुभाष बड़े मतों से विजयी घोषित हुए – इसे गांधी की हार माना गया। गांधी ने स्वयं इसे स्वीकार करते हुए कहा **''यह सीतारमैय्या से अधिक मेरी हार है।''** गांधी – सुभाष के बीच पत्राचार से स्पष्ट था कि दोनों के बीच गहरे वैचारिक मतभेद हैं। गांधी ने सुभाष को अपने २ अप्रैल १९३९ के पत्र में साफ शब्दों में लिखा **''आपके और मेरे विचार एक दूसरे के इतने विपरीत हैं कि कहीं कोई समानता की संभावना नहीं है. ....विचारों में भिन्नता कोई गलत नहीं है, अगर गलत है तो एक दूसरे के प्रति सम्मान एवं विश्वास का अभाव।''** सुभाष ने समझौते का प्रयास करते हुए गांधीजी को पत्र लिखकर बीच–बचाव का प्रस्ताव दिया एवं गांधीजी को सक्रिय राजनीति से सन्यास को वापस लेकर पुन: कांग्रेस का चार आने का सदस्य बनकर नेतृत्व संभालने का अनुरोध किया। गंभीर मतभेद एवं विरोध के बीच सुभाष ने २९ अप्रैल १९३९ को कांग्रेस अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया एवं ३ मई को फारवार्ड ब्लाक की स्थापना की घोषणा कर दी। बंगाल एवं गांधी में मतभेद पुन: उभर कर सामने आये। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने सुभाष को **'देशनायक'** कहकर सम्मानित करते हुए एक लेख में गांधी की भूल–त्रुटियों की चर्चा करते हुए घोषणा की – **''अब बंगाल का नेतृत्व सुभाष चन्द्र बोस के हाथ में है।''** कांग्रेस ने सुभाष को दल से निष्काषित करते हुए किसी भी दलीय चुनाव के लिये तीन वर्षो तक आयोग्य घोषित कर दिया। टैगोर ने गांधी को तार भेजकर इस घोषणा को वापस लेने का अनुरोध किया। गांधीजी ने अपने उत्तर में कहा–कांग्रेस कार्यकारिणी ने आपके सुझाव पर विचार किया लेकिन यह प्रतिबन्ध नहीं उठाया जा सकता। गांधीजी ने टैगोर से सुभाष को दल के अनुशासन को स्वीकार करने का परामर्श देने को कहा। इस बीच गांधी एवं टैगोर के व्यक्तिगत सम्बन्धों में सुभाष प्रकरण के बावजूद लगातार सुधार होता रहा। १९४० में टैगोर ने **'गांधी महाराज'** कविता लिखते हुए गांधी के प्रति आदर व्यक्त किया।

गांधी–सुभाष के बीच पत्राचार बराबर जारी रहे जहाँ एक–दूसरे प्रति आदर एवं सम्मान की भावना बनी रही। सुभाष की १९४० में गिरफ्तारी पर कांग्रेस के मौन रहने को गांधी ने उचित ठहराया। १६ जनवरी १९४१ को सुभाष अपने एलगिन रोड निवास स्थान से पुलिस की आंखों में धूल झोंककर देश पलायन करते हैं। इसी वर्ष १७ दिसम्बर को गांधीजी सुभाष के घर उनके शयनकक्ष को देखने जाते हैं जहां से सुभाष ने पलायन किया था। मतभेदों के बावजूद बापू एवं सुभाष के बीच एक दूसरे के प्रति सम्मान में कभी कोई कमी नहीं आयी। गांधी कहते थे दोनों का उद्देश्य एक है, लेकिन रास्ते अलग–अलग।

३ जनवरी १९४६ को **''हिन्दुस्तान स्टेण्डर्ड''** में प्रकाशित रपट के अनुसार गांधीजी ने मिदनापुर जिला कांग्रेस कार्यकर्त्ता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि **''मुझे विश्वास है कि सुभाष अभी जीवित हैं। सही समय पर वे प्रकट होंगे। मैं उनके साहस और बहादुरी की प्रशंसा करता हूँ, हालांकि हमारे विचारों में मतभेद है। भारत कभी भी हिंसा के माध्यम से स्वतंत्रता नहीं प्राप्त कर सकता।''** बाद में जब गांधीजी को उनकी मृत्यु के समाचार पर विश्वास हुआ तो उन्होंने इसे स्वीकार करते हुए कहा **''नेताजी हमें छोड़कर चले गये हैं।''**

१९४६ में मुस्लिम लीग के डायरेक्ट एक्शन के नतीजन बंगाल – बिहार में बड़े पैमाने पर हिन्दू–मुस्लिम दंगे को दबाने के लिये गांधीजी दिल्ली से बंगाल के लिये रवाना होते हैं। २९ अक्टूबर १९४६ से ७ सितम्बर १९४७ को दिल्ली रवाना होने तक बापू मुख्यत: दंगाग्रस्त बंगाल में ही रहते हैं। स्वतंत्रता दिवस १५ अगस्त १९४७ के ऐतिहासिक अवसर पर बापू कलकत्ता के बेलियाघाटा में ही निवास करते हैं। स्वतंत्रता समारोह के विषय में बापू कहते हैं **''मैं इस खुशी में शामिल नहीं हो सकता क्योंकि स्थिति बहुत ही चिन्ताजनक है।''**

बंगाल एवं गांधीजी के खट्टे–मीठे सम्बन्धों पर राज्यपाल गोपालकृष्ण गांधी की यह पुस्तक एक ऐतिहासिक दस्तावेज है, जिसके सम्पादन में गोपाल गांधी की विद्वता की साफ झलक मिलती है। १८९६ में अपनी पहली यात्रा एवं १९४७ की अन्तिम यात्रा के बीच गांधीजी ने इस ५१ वर्षो में बंगाल की ६४ यात्राएँ कीं एवं यहाँ ५६६ दिन व्यतीत किये। एक तरफ जहां बंगाल की आम जनता ने, किसानों ने, एवं गरीबों ने उन्हें हृदय से लगाया वहीं बुद्धिजीवियों का एक तबका उन्हें प्रश्न करता दिखता है। प्रो. सेन ने पुस्तक की भूमिका में ठीक लिखा है कि **''अगर कहीं कोई विवाद था तो वह बंगाल एवं गांधी के बीच नहीं, बंगाल एवं बंगाल के बीच गांधीजी को लेकर था।''** अड्डे–बाजी के लिये प्रसिद्ध तार्किक बंगालियों के लिये गांधीजी एक पसन्ददीदा विषय थे। हिन्दु–मुस्लिम दंगों में बंगाल प्रवास के दौरान गांधीजी की यह उक्ति **''मैं बंगाल छोड़ने में असमर्थ हूँ एवं बंगाल मुझे जाने नहीं देगा''** इन सम्बन्धों का सटीक विवरण है।

–36, शैक्सपीयर सरणी, एस.बी.टावर
कोलकाता – 700 017

समाज के सामने युगीन प्रश्न

- डॉ. अरुण प्रकाश अवस्थी

आज मारवाड़ी समाज अन्य लोगों की दृष्टि में मात्र धन अर्जन करने वाला समाज बन कर रह गया है। लेकिन इस समाज के जन सेवा के कार्यों, परोपकार, राजस्थान की त्याग भावना, शौर्य आदि की उज्जवल परम्परा को विस्मृत सा कर दिया गया है। जिस राजस्थान ने बाप्पा रावल, राणाप्रताप, महान दानवीर भामाशाह, भक्ति की गंगोत्तरी मीराबाई, पन्नाधाय सरीखे रत्नों को जन्म दिया और जिन पर सम्पूर्ण राष्ट्र को गर्व है, उन्हें नई पीढ़ी भुला बैठी है। यह सत्य है कि जिस समाज ने स्वयं के विकास के साथ राष्ट्र को समृद्धि दी और लोक सेवा में अपना अग्रस्थान बनाया है। आज देश के किसी भी कोने में चले जाइए इस समाज द्वारा स्थापित आधुनिकतम चिकित्सालय शिक्षा तकनीकी संस्थान, धर्मशालाएं, मंदिर आदि कितने ही लोक हितकारी संस्थान मिल जाएंगे। इस समाज के धैर्यवान एवं साहसी जनों ने दूरस्थ एवं बीहड़ प्रदेशों में भी अपनी उद्यमिता एवं सेवा–भावना का परिचय दिया है। एक अंग्रेज लेखक सर टामस ने ठीक ही कहा है– मारवाड़ी समाज ने जहां केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में अपनी उद्योग प्रियता व साहसिक वृत्ति का परिचय दिया है वहीं जन–सेवा के क्षेत्र में भी प्रथम श्रेणी का कीर्तिमान स्थापित किया है। भारत में लोक सेवा क्षेत्र में जितना भी गैर सरकारी धन लगा है उसमें ९० प्रतिशत इसी समाज का है।

दहेज तो बदनाम है, पर फिजूल खर्ची गुमनाम है। वाह्य आडम्बर, कीमती निमंत्रण पत्र, सजावट, नृत्य संगीत, फूहड़ हास्य गीत सम्मेलन, प्रीति भोज, प्रकाश व्यवस्था आदि पर न जाने कितना धन बर्बाद किया जाता है। यही प्रदर्शन अन्य समाज वालों की आंखों में खटकता है।

किन्तु इस उज्ज्वल पक्ष का प्रचार नहीं किया गया। इसके मूल में यह समाज ही है। वर्तमान में भी स्वनाम धन्य जुगल किशोर बिड़ला, मनीराम बागड़, घनश्याम दास बिड़ला, जुगीलाल कमलपत, सूरजमल जालान, सीताराम सेक्सरिया, शिव प्रसाद तुलस्यान आदि का नाम श्रद्धा से लिया जाता है। पहले किसी भी शुभ–अशुभ कार्य में एक राशि जनसेवा के लिए निकाली जाती थी। आज विकृत आधुनिकता के नाम पर अनेक कुरीतियों को अपना लिया गया है। उन्हीं के कारण समाज का उज्जवल पक्ष धुमिल होता जा रहा है। आडम्बर व प्रदर्शन को ही श्रेष्ठता का प्रमाण–पत्र मान लिया गया है। अब तो सालगिरह मनाने में ही भारी भरकम राशि का अपव्यय होने लगा है। **दहेज तो बदनाम है, पर फिजूल खर्ची गुमनाम है। वाह्य आडम्बर, कीमती निमंत्रण पत्र, सजावट, नृत्य संगीत, फूहड़ हास्य गीत सम्मेलन, प्रीति भोज, प्रकाश व्यवस्था आदि पर न जाने कितना धन बर्बाद किया जाता है। यही प्रदर्शन अन्य समाज वालों की आंखों में खटकता है।**

अब तलाक तो जैसे आम बात हो गई है। कभी–कभी इतनी छोटी बातों पर तलाक होते हैं कि सुनकर रोना आता है। यद्यपि यह सत्य है कि मारवाड़ी समाज में दहेज को लेकर प्रताड़ना एवं वधू–दाह की घटनाएं अन्य समाजों की अपेक्षा बहुत ही कम है। लेकिन जिस समाज की चादर जितनी भी अधिक उज्जवल होगी, दाग उतना ही गहरा दिखाई देगा। तलाक के साथ भ्रूण परीक्षण की आधुनिकता सर्पिणी की तरह फुंफकारने लगी है। इन सारी विकृतियों पर समाज के कर्णधारों एवं नई पीढ़ी को समवेत रूप से विचार करना चाहिए।

समाज का आंतरिक परिवेश भी यदि अपनी संस्कृति एवं संस्कारों से अलंकृत हो जाए तो समाज की उज्ज्वल चादर पर लगे ये दाग निश्चित रूप से मिट जाएंगे। समाज को गौरवान्वित होना चाहिए कि समस्त विश्व को हमने व्यवसाय एवं व्यापार की शिक्षा दी। ऋग्वेद के राजापणि ने अन्य देशों पर विजय प्राप्त करने के स्थान पर व्यवसाय को प्राथमिकता दी थी। उन्हीं राजापणि के नाम से विवणन (Marketing) शब्द बना और पणि वणि एवं उससे वणिक बना। इसी समाज के द्वापर एवं कलियुग के संधिकाल में अग्रोहा नरेश अग्रसेन ने सर्वप्रथम गणतांत्रिक एवं समता मूलक शासन व्यवस्था को स्थापित कर यज्ञ में पशु बलि प्रथा को बन्द किया। समाज को गर्व करने के पर्याप्त आधार हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, लाला लाजपतराय, महान क्रांतिकारी हरदयालु, आधुनिक हिन्दी के प्रणेता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, छायावाद के स्तम्भ जयशंकर प्रसाद आदि इसी समाज में थे। वर्तमान में भी अनेक चिकित्सक इंजीनियर, कानून वेता, शिक्षा शास्त्री चार्टर्ड एकाउटेंट भी समाज का नाम उज्ज्वल कर रहे हैं। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जो इसी समाज के थे ठीक ही कहा है कि यदि कतिपय कुरीतियों को त्याग दें तो हम पुनः पूर्व गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित होंगे ही–

शानदार था भूत भविष्यत भी महान है।
अगर संभाले उसे आज जो वर्तमान है।।

– सीए5/10, देश बन्धु नगर, बागुईहाटी
कोलकाता–700 059
मो.–9903497179

IISD

A Gateway to Careers

SREI Foundation

FOR GRADUATES
THE ULTIMATE PROFESSIONAL EDGE

MBA

BBA BCA

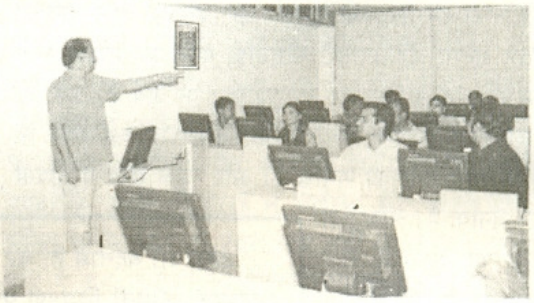

EXCELLENT OPPORTUNITY FOR MASTER DEGREE IN MANAGEMENT WHILE WORKING IN OWN CAREER.

CONVENIENT WEEKEND CLASSES AVAILABLE

Specialisations offered

- Marketing
- Finance
- Human Resource Management
- Information Technology

Other Major Courses Conducted By IISD

- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi.
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examination (Both Preliminary and Main).
- WBCS (Executive & Judicial) and Allied Services Examination (Prelims and Main).
- Company Secretary Courses (Foundation, Intermediate and Final).
- PG Medical Entrance including MD / MS, M.R.C.P., D.N.B., etc.

FACILITIES

- Most convenient and well-connected location in Salt Lake, next to the Easter Zonal Cultural Centre.
- AC Class Rooms.
- Eminent highly qualified and experienced faculty.
- Tutorials, personalized coaching, seminars and workshops.

Degree conferred by Punjab Technical University approved by UGC, Ministry of HRD, GoI, and DEC.

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata 700 106

Ph.: 2335 2378/2861, Fax: 2335 2379

E-Mail: info@iisdedu.in Website : www.iisdedu.in

राज्यपाल गोपालकृष्ण गांधी की पुस्तक :

''ए फ्रेंक फ्रेंडसिप : गांधी एण्ड बंगाल''

ए डिस्क्रीपटीक क्रोनोलाजी

– सीताराम शर्मा

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल एवं महात्मा गांधी के पौत्र श्री गोपालकृष्ण गांधी की पुस्तक ''**ए फ्रेंक फ्रेंडसिप : गांधी एण्ड बंगाल : ए डिस्क्रीपटीक क्रोनोलाजी**'' गांधी एवं बंगाल के बीच असहज एवं असामान्य आपसी रिश्तों के उतार–चढ़ाव की अनकही तथ्यात्मक कहानी है।

पुस्तक की प्रस्तावना में ही नोबल पुरस्कार विजेता विद्वान अर्थशास्त्री प्रोफेसर अर्मत्य सेन ने इस बात को स्वीकार किया है कि '**भद्र बंगाली समाज**' की गांधी से बराबर एक दूरी एवं असहमति की भावना रही। प्रो. सेन ने इस दूरी को सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनैतिक परिपेक्ष्य में स्पष्ट करने का प्रयास किया है। सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टि से बंगाल जो देश के शेष प्रांतों से शिक्षा एवं सामाजिक मूल्यो में उस समय कहीं अधिक उन्नत था, गांधी की जीवन शैली, विचारों एवं आचरण के उपदेशों को स्वीकार करने के लिये पूरी तरह तैयार नहीं था। प्रो. सेन के अनुसार गांधी एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर के बीच मतभेद एवं विरोध को भी बंगाली पचा नहीं पाये। गुरुदेव उस समय के बंगाल के सबसे बड़े हीरो थे।

राजनैतिक रूप से भी प्रगतिशील एवं क्रान्तिकारी बंगाल गांधी की अंहिसा पर पूर्णतया विश्वास नहीं कर पा रहा था। गांधी के नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के साथ बराबर गहरे राजनैतिक मतभेद रहे। गांधीजी की इच्छा के विरुद्ध सुभाष बोस का कांग्रेस अध्यक्ष निर्वाचित होना एवं गांधी द्वारा सुभाष को त्यागपत्र के लिये बाध्य करना भी गांधी के बंगाल के साथ सम्बन्धों को प्रभावित करता है।

विद्वान एवं कुटनीतिज्ञ गोपालकृष्ण गांधी द्वारा गांधी एवं बंगाल के सम्बन्धों के लिये ''**ए फ्रेंक फ्रेंडसिप**'' विशेषण का उपयोग करना अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण मायने इंगित करता है। कूटनीति में मोटे तौर पर मतभेद एवं विरोध के बीच मित्रता की संभावनाओं को तलाशने को ''**फ्रेंक फ्रेंडसीप**'' कहा जा सकता है। प्रो. अर्मत्य सेन जो गोपाल गांधी के ज्ञान एवं विद्वता के बड़े कायल हैं ने अपने प्राकथन में तलवार की धार पर चलते हुए बंगाल को गांधी विरोधी घोषित कहने से बचते हुए भी यह कहने पर बाध्य हुए हैं कि गांधी एवं बंगाल के बीच विचारों एवं सम्बन्धों में एक अनकहा खिंचाव एवं तनाव था।

उस जमाने के बंगाल के शीर्षस्थ नेताओं एवं पत्रकारों से गांधीजी की पहली मुलाकात बहुत निराशाजनक एवं ठण्डी रही। नवम्बर १८९६ में गांधीजी बंगाल के शेर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी से मिले तो उन्होंने उनमें अधिक रुचि नहीं दिखायी और गांधी को टालते हुए सर राजा पियारी मोहन मुखर्जी एवं महाराज टैगोर से मिलने को कहा। दोनों ने उनका बड़ा ठण्डा स्वागत किया और वापस सुरेन्द्र नाथ बनर्जी के पास ही जाने को कहा। गांधीजी के लिये इशारा स्पष्ट था। उन्होंने अब बंगाल के प्रमुख सामाचार पत्रों के सम्पादकों से मिलने का प्रयास आरम्भ किया। ''**अमृत बाजार पत्रिका**'' में जिस वरिष्ठ पत्रकार से वे मिल पाये उन्होंने गांधी को एक घुमक्कड़ यहूदी समझा और विदा कर दिया। प्रमुख अखबार '**बंगवासी**' के सम्पादक ने उन्हें एक घण्टा बाहर बैठा दिया। आखिर जब मिले तो सम्पादक महोदय ने गांधी को कुछ झिड़कते हुए ही कहा – ''**यहां सुबह–शाम आप जैसे लोगों का ताँता लगा रहता है, मेरे पास आपकी बात सुनने का समय नहीं है।**'' स्थानीय नेताओं एवं पत्रकारों से निराश गांधी को विदेशी अखबारों '**द स्टेटसमैन**' और '**द इंगलिसमैन**' ने बड़ा महत्व दिया एवं उनके विचारों को प्रमुखता से प्रकाशित किया। २६ वर्षीय युवा मोहनदास करमचन्द गांधी का बंगाल से यह प्रथम साक्षात्कार था, जो निश्चित रूप से सुखद नहीं था। वे कोलकाता में एक आम सभा करना चाहते थे लेकिन बंगाल के बुद्धिजीवियों एवं तत्कालीन सामाजिक एवं राजनैतिक नेतृत्व ने उनमें या उनके दक्षिण अफ्रिकी आन्दोलन में कोई गहरी रुचि नहीं दिखायी।

देशबन्धु चित्तरंजन दास एवं सुभाष चन्द्र बोस ने **चौरी चोरा** घटना पर गांधीजी द्वारा सत्याग्रह आन्दोलन वापस लेने की खुलकर आलोचना करते हुए इसे '**बंगलिंग**' बताया तो रवीन्द्रनाथ टैगोर ने १९२९ में गांधी के खादी आन्दोलन की खुलकर आलोचना की। दिसम्बर १९२२ के गया कांग्रेस अधिवेशन में मतभेद उभर कर सामने आये जब तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष देशबन्धु चितरंजन दास द्वारा प्रस्तावित प्रस्ताव ८९० के मुकाबले

राजस्थानी खान पान और उसकी विशिष्टता

:: मनमोहन बागड़ी ::

राजस्थानी समाज भोजन प्रेमी है। हमारे पारम्परिक खान पान न केवल स्वाद की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं, वरन् स्वास्थ्य एवं आर्थिक दृष्टि से भी सर्वोत्तम हैं। –चोखो खावणो, चोखो पैरणो और चोखो रैवणो–राजस्थानी समाज की विशेषता है। आज भी तीज त्यौहार, मांगलिक प्रसंगों एवं ऋतु के अनुसार पीढ़ी दर पीढ़ी घरों में पारम्परिक रसोई बनाई जाती है। महत्व की बात यह है कि हर राजस्थानी घर में अपने–अपने क्षेत्र के अनुसार त्यौहार विशेष पर एक ही तरह की रसोई बनती है। उदाहरणार्थ, बीकानेर में अक्षयतृतीया के दिन खीचड़ा–इमलाणी की रसोई हर घर में बनती है। इसी प्रकार प्रत्येक ऋतु के अनुकूल विशेष रसोई बनाई जाती है। बरसात तथा सर्दी के मौसम में दाल का सीरा और पकोड़ी बना कर मौसम का आनन्द लेना राजस्थानियों की अपनी खासियत है। विशिष्ट मौकों पर बादाम का सीरा और बादाम की कतली का परोसा जाना समृद्धि सूचक माना जाता है। राजस्थान के खान पान की बानगी देखें :–

१. होली (फागुन सुदी १५) के दिन कांजी बड़ा, कैर, ग्वार फली, दाल का सीरा, पापड़ और कढ़ावा के साथ–साथ लापसी, मूंग–चावल और आँवला की काली बड़ी की रसोई हर घर में बनाई जाती है। अनेक घरों में होली के बाद गणगौर का और सिंधारा के समय भी विशेष रसोई बनाई जाती है।

२. शीतला अष्टमी (चैत सुदी ८) को ठंडा जिसमें गुड़ की राबड़ी, डोवे की राबड़ी, गुड़ का सीरा, गुल–गुल्ला, बाजरी की रोटी, बेढवीं पूड़ी, सांगरी का साग, कैरी या दानामेथी की लूंजी आदि बनाई जाती है।

३. माताजी (चैत सुदी ८) वाले दिन मूंग–चावल और लापसी, बड़ी की रसोई बनती है। अनेक घरों में खीर, पूड़ी और चने की सब्जी बनाई जाती है।

४. चिड़िया छठ (सावन बदी ६) को कुंवारी कन्याओं द्वारा भोजन में एक वक्त एक धान गेहूं से व्रत करवा कर अच्छे वर की कामना की जाती है। सावन में तीज के सिंधारा में विशेष पकवान बनाये जाते हैं।

५. बड़ी तीज (भादवा बदी ३) को व्रतधारी गेहूं, चावल, चना का बारा भेजना और रात को चंद्रमा देख कर दूध– दही की फिदड़ फल सातू प्राशना एवं खाटा खाना एक ऐसी परम्परा महिलाओं के सुहाग से जुड़ी हुई है। अनेक घरों में भादवा बदी ५ को सीरा पूड़ी की रसोई बनाई जाती है।

६. जन्माष्टमी (भादवा बदी ८) के दिन कड़ा व्रत रखा जाता है, दिन में केवल फलाहार लिया जाता है। फिर रात के १२ बजे कृष्ण जन्म की आरती के बाद पंचामृत और पंजेरी से व्रत का पारण और रात को १२ के बाद भोग लगा कर भगवान कृष्ण के प्रति अतुलनीय आस्था को महिमा मंडित किया जाता है।

७. गोगानवमी (भादवा बदी ९) को गोगाजी की पूजा करके राखी खोली जाती है और खीर पूड़ी सीरा की रसोई बनाई जाती है। इसी दिन नन्दोत्सव मनाते हुए दूध दही उछाल कर पंचामृत पान करते हुए कृष्ण जन्म की खुशी मनाई जाती है, बधाइयां दी जाती हैं।

८. बछ बारस (भादव बदी १२) को ग से शुरू होने वाली कोई वस्तु नहीं खाई जा सकती है। प्राय: बाजरी की रोटी, चने का साग, सांगरी, दाना, मेथी का साग, दही (भैंस के दूध का) खाया जा सकता है।

९. दशहरा (आसोज सुदी १०) और दीपावली (कार्तिक बदी ३०) को सुबह मूंग, चावल, लापसी कैर फली, पापड़ की रसोई बनाई जाती है। दीपावली की रसोई में रात को तवा नहीं चढ़ता है, अत: पूड़ी साग की पक्की रसोई ही बनाई जाती है। इसके पीछे यही भावना है कि लक्ष्मी पूजन और दीपोत्सव मनाने में महिलाएं भी पूरी तरह शरीक हों ताकि वे रसोई जैसे दैनिक कार्य में व्यस्त न रहे।

१०. शरद पूर्णिमा (आसोज सुदी १५) के दिन रात में चंद्रमा को सफेद खीर और बड़क का भोग लगाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि चांदनी के रूप में अमृत वर्षा हो रही है।

११. मलमास (१४ दिसम्बर से १३ जनवरी) तक की रसोई में कभी न कभी गुड़ का चूरमा और दाल की पकोड़ी बना कर मंगल या शनिवार को मल उतारा जाता है।

१२. संक्रांति (१४ जनवरी) के दिन तिल के लड्डू, खीचड़ी, मूली का धूम बगारिया खाना जरूरी है।

तीज त्यौहार के मौके पर हर छोटे बड़े घर में एक ही स्तर और एक ही स्वाद की रसोई बनाई जानी राजस्थानी लोगों की विशेषता है। इसी तरह राजस्थान के प्रत्येक क्षेत्र में कोई न कोई विशेषता रहती है। कहीं पर बादाम की कतली तो कहीं पर मावा की कचौड़ी, कहीं की रबड़ी तो कहीं की जलेबी अपनी विशेष पहचान बनाये हुए है। राजस्थानी मिठाइयां न केवल स्वादिष्ट होती हैं बल्कि इनकी साज सज्जा भी दर्शनीय होती है। दाल की बर्फी के ऊपर चांदी का बर्क एवं काजू, बादाम एवं पिस्ते के टुकड़ों को सजाकर खाने के पहले ही खाने वाले का दिल खुश हाल कर देता है। महीन बूंदी की बर्फी या बूंदी के लड्डूओं को मोती–पाक या मोती–चूर से सम्बोधित किया जाता है।

राजस्थानी खानपान को लोक कवियों ने स्वर में भी बांधा है यथा:

कलाकन्द केसर री भावे रायतो दाख्यों रो भावे.....

सीरो दाल रो, ओ तो सिंगलों रे मन भावे जनता बड़े चाव सूं खावे, मूंह में धरियों सींधो जावे.....

होली के त्यौहार पर इन गीतों को बड़े चाव से सामूहिक रूप से गाया जाता है।

यह जग प्रसिद्ध है कि राजस्थानी व्यंजन एक से एक बढ़कर है और ये इतने स्वादिष्ट होते हैं कि राजस्थानी समाज को छोड़ कर अन्य समाज के लोग भी इसके लिये तरसते हैं। राजस्थान के शर्बत, सुपारी, खाटे, काचर, बोर, मतीरा, काकड़ियां, कैर, भुजिया, पेठा, फीणी, मिर्च मसाला आदि सभी विशेषताओं से भरपूर हैं। सारांश में पूरे विश्व में राजस्थानी खान–पान का कोई मुकाबला नहीं है।

– 5, कमल भवन, जे.बी. नगर,
अंधेरी पूर्व, मुम्बई–400059
मो.– 09324587952

हास्य कथा :

मारो भचीड़

- ताऊ शेखावाटी

''गांव बसावै बणियो, पार पड़ै तो जाणियों'' जाने यह कहावत कब, क्यों और किस गांव के लिए चली होगी, किन्तु मेरा गांव ''रामगढ़ सेठाण'' शायद इसका अपवाद है। वह गांव जिसे कभी बनियों ने, और मात्र बनियों ने ही बसाया था, उसकी तो ऐसी पार पड़ी कि आज वह राजस्थान में शोखावाटी क्षेत्र का एक प्रमुख शहर है। वैसे भी पूरे देश में यही एक गांव ऐसा है, जिसे कभी वणिक पुत्रों ने बसाया था, अन्यथा तो सारे ही गांव–नगरों को बसाये जाने का श्रेय मात्र किसी राजा, महाराजा अथवा नवाबों या किसी सरकार को ही जाता रहा है। किसी समय दूसरी काशी के नाम से प्रसिद्ध यह नगर शिक्षा के क्षेत्र में भी सदैव ही अग्रणी रहा है।

मास्टर कामता प्रसाद उन दिनों वहां की रुइया कॉलेज में होस्टल वार्डन थे। वे मूलत: मराठी थे। वर्षों से वहां पर रहते–रहते उन्हें वहां की स्थानीय भाषा बोलने का अच्छा अभ्यास हो गया। वे हॉस्टल में रहने वाले सभी बच्चों के साथ राजस्थानी में ही बतियाते थे।

मास्टर कामता प्रसाद बहुत ही हँसमुख स्वभाव के व्यक्ति थे। कॉलेज समय के पश्चात वे हॉस्टल के सभी लड़कों के साथ मित्रवत व्यवहार करते थे व एक परिवार के सदस्य की तरह स्नेह देते थे।

लड़के भी उनका बहुत सम्मान करते थे। सभी उन्हें 'गुरुजी' सम्बोधन दिया करते थे।

हॉस्टल में अक्सर रात्रि के समय सभी लड़के गुरुजी के पास इकट्ठे हो जाया करते थे व तरह–तरह के किस्से कहाँनियाँ सुना–सुना कर एक दूसरे का मनोरंजन किया करते थे। कभी–कभार गाने–बजाने का प्रोग्राम या कोई साहित्यिक परिचर्चा भी हो जाया करती थी।

उस रात गोष्ठी में ''राजस्थानी भाषा ज्ञान'' विषय को लेकर कोई परिचर्चा चल रही थी कि बातों ही बातों में गुरुजी बच्चों के साथ इस बात को लेकर अड़ गए कि उन्हें राजस्थानी भाषा का संपूर्ण ज्ञान है।

लड़कों ने उन्हें लाख समझाया कि यद्यपि राजस्थानी बहुत ही सरल भाषा है और वर्षों से यहां रहते–रहते वे उसे बोलने–समझने भी लगे हैं, पर किसी भी भाषा का संपूर्ण ज्ञान किसी दूसरे भाषा– भाषी के लिए सहज संभव नहीं हो सकता।

हर भाषा के कितने ही अपने गूढ़ शब्द ऐसे होते हैं, जिन्हें वहां के मूल निवासी ही समझ सकते हैं। राजस्थानी में भी ऐसे कितने ही गूढ़ शब्द हैं जिन्हें यहां की भाषा में 'खाटी' राजस्थानी शब्द कहा जाता है। उन खाटी राजस्थानी शब्दों का ज्ञान उन्हें आज भी नहीं है। अत: कृपया वे अपनी इस बात पर अड़ें नहीं कि उन्हें सारी ही राजस्थानी भाषा आती है, पर गुरुजी अपनी बात पर अड़े ही रहे।

''मैं तुम्हारी राजस्थानी भाषा के हर गूढ़ शब्द का अर्थ अच्छी तरह से समझता हूँ।'' गुरुजी बच्चों को चुनौती देते हुए बोले। ''यदि तुम लोग चाहो तो जब तुम्हारी इच्छा हो, मुझे इस बात के लिए आजमा सकते हो। हार तुम्हारी ही होगी।'' लड़कों ने तब मन ही मन गुरुजी की चुनौती स्वीकार कर ली थी।

दूसरे दिन सुबह–सुबह ही गुरुजी शौच करने के बाद शौचालय के बाहर लगे पानी के नल पर बैठे बालू रेत से अपने हाथ मांज रहे थे कि दूर से आते कुछ हॉस्टल के लड़कों ने उन्हें नमस्कार करते हुए आवाज लगाते हुए पूछा– ''गुरुजी! मार्‌याया के भचीड़?'' (हे गुरुजी! आप शौच कर आए क्या?) हाँ भाया मार्‌याया भचीड़ (हाँ भैया! मैं शौच कर आया हूँ) गुरुजी ने तुरंत जवाब दिया।

यद्यपि गुरुजी ने यह 'भचीड़' शब्द जीवन में पहली बार सुना था, किन्तु मामला चूंकि प्रतिष्ठा का था, अत: लड़कों के सामने उन्होंने ऐसे भाव प्रदर्शित किए, जैसे वे उस शब्द का अर्थ भली भांति जानते हों।

गुरुजी के इस चातुर्य पर मन ही मन हँसते हुए वे लड़के तब वहां से आगे बढ़ गए। लड़कों के साथ हुए इस वार्तालाप से गुरुजी उस दिन इतना तो समझ ही गए थे कि राजस्थानी भाषा में शौच करने को भचीड़ मारना भी कहा जाता है। शौच क्रिया के इस राजस्थानी पर्याय वाचक शब्द को तब उन्होंने मन ही मन अच्छी तरह से याद कर लिया था।

दोपहर में गुरुजी सभी लड़कों के साथ भोजन कर रहे थे। हॉस्टल कैंटीन में उस दिन स्पेशल डाइट (विशेष भोजन) की

व्यवस्था की गई थी। भोजन में खीर–जलेबी बनी थी। गुरुजी के सामने परोसी हुई थाली में, गर्म खीर से भरे कटोरे में से मीठी–मीठी खीर की सुगंध आ रही थी।

''आज तो खीर बड़ी स्वादिष्ट बनी है।'' उन्होंने चम्मच से खीर चखते हुए कहा।

''फेर देखो के हो गुरुजी। मारो भचीड़।'' (फिर देख क्या रहे हैं गुरुजी! खाना शुरु कीजिए) लड़कों ने झट जवाब दिया।

''हां, अभी लो।'' कह कर गुरुजी भोजन करने लगे।

भोजन करते हुए गुरुजी तब मन ही मन सोचने लगे– ''अच्छा, तो राजस्थानी भाषा में कभी–कभी खीर खाने के लिए भी इस 'भचीड़' शब्द का प्रयोग किया जाता है। चलो, अच्छा हुआ इसी बहाने आज यह भी पता चल गया।

गुरुजी की मन–स्थिति को मन ही मन समझते हुए सभी लड़के भी उनके साथ भोजन करने लगे।

शाम के समय कॉलेज के परिसर में बने खेल के मैदान में रस्सा–कसी का खेल हो रहा था। एक तरफ अपने हाथों में मोटा रस्सा थामे कॉलेज के छात्र व दूसरी और शिक्षक, रेफरी के आदेश की प्रतिक्षा में तैयार खड़े थे। उन शिक्षकों की टीम में गुरुजी कामता प्रसाद भी शामिल थे।

दूर दर्शकों के समूह में खड़े कुछ हॉस्टल के लड़के भी यह खेल देख रहे थे।

तब, ''गुरुजी! खड़्या के देखो हो, मारो भचीड़।'' (हे गुरुजी! यों खड़े क्या देख रहे हैं, रस्सा खींचना शुरु करें) अचानक ही उन लड़कों ने मास्टर कामता प्रसाद को संबोधित करते हुए जोर से कहा।

अब तो गुरुजी की हालत देखने लायक थी। उन लड़कों के मुंह से रस्साकसी के खेल में भी ''मारो भचीड़'' वाक्य को सुनकर वे बुरी तरह झुंझला गए।

''भाड़ में जाए यह रस्साकसी। मुझे तो पहले यह बताओ कि यह 'भचीड़' क्या बला है?'' गुरुजी ने अपने हाथों में पकड़े मोटे रस्से को छोड़ते हुए गुस्से में कहा। ''तुम लोग जहां चाहो वहीं इस भचीड़ शब्द का प्रयोग कर लेते हो। शौच करो तो भचीड़ मारो, खीर खानी हो तो भचीड़ मारो और अब रस्साकसी में भी भचीड़ ही मारो। भचीड़! भचीड़!! भचीड़!!! आखिर कहां–कहां मारना पड़ेगा मुझे यह भचीड़?''

''अब तो मान गए न गुरुजी! कि आपको पूरी राजस्थानी भाषा नहीं आती।'' हँसते हुए लड़कों ने गुरुजी की ओर देखकर कहा।

– 32 जवाहर नगर,
सवाई माधोपुर–322001 (राज.)
मोबाईल : 09414270336

''माँ''

– प्रेमलता खण्डेलवाल

''या देवी सर्व भूतेषु, मातृरूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः''

तन माता का दिया हुआ
जीवन माता का दिया हुआ

मेरे चलने में चली है माँ
मेरे हँसने में हँसी है माँ
मेरे जगने पर जगी है माँ
मेरे रुदन से रोई है माँ।।१।।

हर साँस–साँस के स्पंदन में
हर धड़कन के साथ है माँ
जागृत और सुषुप्त अवस्था में
दया–दृष्टि रखती है माँ।।२।।

माँ तू ही शारदा, तू ही लक्ष्मी
तू ही दुर्गा–भवानी माँ!
तू ही श्रद्धा, तू ही ममता
तू ही सुधा–सागर है माँ।।३।।

सृष्टि की रचना में योगदान
सुशोभित है रिश्ते–नाते
हर रिश्तों में जीवंत है माँ
तू ही सृजनहार है माँ।।४।।

माँ तो माँ है
माँ जैसा दुनिया में नहीं दूजा
मैंने तो 'माँ' को देखा है,
मैंने तो 'प्रेम' को नहीं देखा।।५।।

जिस घर में 'माँ'
मंदिर है वह
नित शीश झुका पाओ आशीष,
क्यों जाते हो देवालय में?।।६।।

तन माता का दिया हुआ
जीवन माता का दिया हुआ।

गुवाहाटी टी वेयरहाउसींग प्रा.लि.
जी.एस. रोड, डीसपुर, गुवाहाटी–781005
मो.–9435014299

अंतर्जातीय विवाह-बढ़ते कदम

- डॉ. श्यामसुंदर हरलालका
प्रान्तीय अध्यक्ष, पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन

भारतीय समाज धर्म नैतिकता, जातिवाद सामाजिक परम्परा व रूढ़िवाद के शिकंजों में वर्षों से बंधा हुआ था जिसके चिंतन का बिन्दु इस रेखा से बाहर कभी नहीं आ सकता था।

स्वाधीनता के बाद शिक्षा का प्रसार, रोजगार के साधनों में क्रांतिकारी परिवर्तन, वैज्ञानिक व तकनिकी, साधनों का उपलब्ध होना, आर्थिक स्थिति मजबूत होना, भारतीय समाज की नवीन शैली में बहुत बड़ा बदलाव लेकर आया है। सुरक्षा के नए आयामों से संयुक्त परिवार का बिखराव, पारिवारिक नैतिक मानदण्डों में गिरावट, पाश्चात्य संस्कृति का अंधा अनुकरण भोग सांस्कृतिक व भौतिक जीवन की सामाजिक मान्यता ने हमारे सोच व विचारों में बहुत बड़ा परिवर्तन किया है।

अधिक शिक्षा व रोजगार के साधनों से भौतिक प्रगति की लड़ाई में हमने कब अपने जीवन मूल्यों की बलि चढ़ा दी, हमें पता ही नहीं चला। धन, वैभव, एश्वर्य, सत्ता आदि बातों ने ही समाज को अत्याधिक प्रभावित किया है।

मारवाड़ी समाज विभिन्न वर्गों में बंटा हुआ है। जिसमें अग्रवाल, माहेश्वरी, श्वेताम्बरी, दिगम्बरी, ब्राह्मण, जाट, माली आदि प्रमुख हैं। इन समाजों में भाषा, वेषभूषा, खान–पान आदि की समानता है मगर इनमें आपस में विवाह नहीं होतें है। इसके अलावा विभिन्न प्रदेशों में अन्यान्य भारतीय समुदाय बसते हैं जिनके साथ भी शादी–विवाह की मान्यता नहीं मिलती है।

दो समुदाय के बीच होने वाले शादी–विवाह को अन्तर्जातीय विवाह की संज्ञा दी गई है। पांच शतक पहले इस प्रकार के विवाह की कल्पना करना भी घातक था। ऐसी स्थिति में लड़के–लड़कियों को परिवार व समाज से निष्कासन करना, विभिन्न प्रकार की यातना देना व दो समुदायों के बीच हिंसक संघर्ष होना अस्वाभाविक नहीं था।

आज उच्च शिक्षा के लिए लड़के–लड़कियों को बराबर अवसर प्राप्त है। मध्यम वर्ग अपनी लड़कियों को भविष्य के लिए स्वावलंबी बनाने हेतु उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करता रहा है। फलस्वरूप सह शिक्षा दोनों वर्गों की भागीदारी से आपसी मेलजोल, प्रेम प्रसंग आदि को बढ़ावा मिला है और दो समुदायों के बीच विवाह अभिभावकों के लिए एक मजबूरी है। कुछ अभिभावक दहेज न देने की स्थिति में भिन्न समुदाय के लड़कों के चयन में लड़की से अपनी रजामंदी जताते हैं।

शहरीकरण और जीविकोपार्जन के क्षेत्र में होने वाले आपसी मेल–मिलाप ने भी अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहित किया है।

इन दिनों मारवाड़ी समाज के चिंतन में एक परिवर्तन साफ दिखाई देता है। अग्रवाल, माहेश्वरी, जैन समुदाय में लड़के– लड़कियों के आपसी अन्तर्जातीय विवाह में विशेष अड़चन नहीं दिखाई देती है, लेकिन लड़की के अभिभावक लड़के वालों की सम्पन्नता के प्रति जागरुक जरूर हैं। इन जातियों में काफी सामाजिक मान्यता सम्पन्न विवाह हो रहे हैं लेकिन अभिभावक लड़के लड़कियों के आपसी निर्णय व जिद्द के कारण ही झुक रहे हैं।

गत चालीस वर्षों के लेखन का अनुभव रहा है कि जिन समुदाय में खान–पान, भाषा, वेषभूषा, रीति–रिवाज व भौतिक सम्पन्नता में समानता है उनमें यह विवाह सफल रहा है। जिन लोगों ने बंगाली, असमीया, गुजराती या अन्य भाषायी लड़कियों से विवाह किया है वे अधिकतर सफल रहे हैं मगर मारवाड़ी लड़की इस समाज से बाहर जाकर पछतावा करती है, कारण जीवन भर निरामिष भोजन के बाद आमिष भोजन, विभिन्न भाषा, रीति–रिवाज व पारिवारिक वातावरण उन्हें रास नहीं आता।

बढ़ती हुई उम्र, सामाजिक स्वच्छन्दता, टीवी और विडियों का उत्तेजित यौन वातावरण, अश्लील साहित्य भी एक प्रमुख कारण है कि आज समाज के लड़के–लड़कियाँ शादी से पहले प्रेम प्रसंग में फँसकर अन्तर्जातीय विवाह बंधन में बंध रहे हैं।

मारवाड़ी के किसी भी वर्ग में आपसी सौहार्दपूर्ण वातावरण में अन्तर्जातीय विवाह का हमें स्वागत करना चाहिए। इससे हमारा दायरा बढ़ेगा, विभिन्न समाज में एकता व भाईचारे की नींव अधिक मजबूत होगी।

गत कुछ वर्षों में अग्रवाल, जैन, महेश्वरी व गुजरातियों में एक दूसरे के बीच काफी अन्तरजातिय विवाह हुए हैं जिसे समाज की मान्यता प्राप्त है। लेखक को बहुत से विवाहों में

भाग लेने का अवसर मिला तो देखा कि दोनों तरफ के लोगों में पूर्ण उत्साह है, इस प्रकार की शादियों की तारीफ भी कर रहे हैं। लड़का किसी भी वर्ग का हो उनका मुख्य मापदंड लड़के की योग्यता, पारिवारिक वातावरण व सम्पन्नता ही देखी जाती है। मैं बहुत से युवकों को जानता हूँ जिन्होंने असमीया लड़कियों से शादी करके घर बसाया है व उन लड़कियों से मिलने पर आश्चर्य होता है कि वे पूर्ण रूप से घुलमिल गई हैं। उनकी वेषभूषा, बोलचाल रीति–रिवाज आदि से लगता नहीं वे कभी भी असमिया समाज से आयी हुई हैं।

सन् १९६७ में मैं गौहाटी विश्वविद्यालय में छात्रसंघ का नेतृत्व करता था उस समय मेरे एक मारवाड़ी सहपाठी को असमीया लड़की से प्रेम हो गया। लड़की भी एम.ए. की छात्रा थी और गौहाटी के बहुत सम्पन्न असमीया परिवार से नाता रखती थी। लड़का छात्रावास में रहता था, दोनों ने कामाख्या मंदिर में जाकर विवाह कर लिया लेकिन लड़की के घरवालों ने इसे नहीं स्वीकारा। उन्होंने लड़की पर काफी जुल्म किए मगर वह एक दिन अपने पिता की कैद से भाग गई और लड़के के साथ उसके शहर में चली गई। उधर लड़के के घरवालों ने भी घर में घुसने नहीं दिया फलत: उन लोगों ने बहुत ही दयनीय परिस्थिति में दिन गुजारे और अपने घर के सामने ही रहने लगे। एक अर्से बाद देखा गया कि लड़की की मिलनसारिता मारवाड़ी बोलचाल गीत, रीति–रिवाज में अन्य मारवाड़ी लड़कियों से बहुत आगे है और मारवाड़ी समाज में उसे मान्यता मिलने लगी। बहू के गुणों की चर्चा सुनकर घरवालों ने भी अपना लिया और बाद में लड़की के पिता ने भी स्वीकार लिया। आज वे बहुत सुखी सम्पन्न हैं। उस लड़की को देखकर हमें गर्व होता है। वह एक शिक्षा संस्था की प्रधान आचार्या है। अब स्थिति वह नहीं है जो हमने ४० वर्ष पूर्व देखी थी। अब आए दिन असमिया लड़कियों से शादी की चर्चा सुनते रहते हैं। बहुत सी शादियों में शरीक भी होते रहते हैं। मैं एक मारवाड़ी डॉक्टर लड़की, एक कॉलेज की अध्यापिका को जानता हूँ जो असमीया लड़के से शादी करके खुशहाली की जिन्दगी जी रही हैं। ऐसे काफी उदाहरण हैं।

अन्तर्जातीय विवाह विश्व भर में स्वीकार्य है। विभिन्न वर्ग, जाति व धर्म के लोगों में शादियाँ आम बात हो रही है मगर सफलता के बारे में हमें आज भी शंका है। भारतीय हिन्दू समाज में जहाँ लड़के व लड़कियों के विचारों में समानता है उच्च शिक्षित है उनमें सफलता की उम्मीद अधिक है। अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिलना चाहिए मगर सफलता के पहलुओं की बलिबेदी पर नहीं।◆

राजस्थानी लोक कथा:

सौ का भाई साठ

एक बनिया एक जाट से सौ रुपये माँगता था। जाट की साख अच्छी नहीं थी। बस चलते लिया हुआ रुपया वापस नहीं देता था। हर बार कोई न कोई बहाना गढ लेता था। एक बार बनिये ने ज्यादा तकाजा किया तो जाट ने कहा

"बही ले कर घर आ जाना। आज हिसाब साफ कर दूंगा। बहुत दिन हुए आपको चक्कर लगाते हुए।"

सेठ खुशी खुशी बही ले कर उस के घर गया। सोचा, आज चौधरी को जब्बर सुमत सूझी ! सनकी के जंच गयी सो भली। जाट ने सेठ के पास खड़े होकर कहा "क्यों सेठजी मेरे खाते में सौ रुपये बोलते हैं न? आज एक-एक पाई चुका देता हूँ। देखो ठीक से हिसाब साफ करना ।"

फिर अंगुलियों पर जोड़ बाकी करते हुए बोला

"सौ का भाई साठ-आधे गये भाग
दस दूंगा, दस दिलाऊँगा,
और दस का क्या लेना देना
बोलो हिसाब साफ हुआ कि नहीं?
चलो अब बच्चों का मुंह मीठा कराओ
बहुत दिनो बाद वसूली हुई है।"

यह सुन कर बनिये से भी हंसे बिना नहीं रहा गया। जाट का एक छोरा पास ही खड़ा था। बोला "क्यों काका आज सेठजी बहुत खुश दिख रहे हैं।" जाट ने कहा "आज खुश नहीं होंगे तो कब होंगे पूरे सौ रुपयों का हिसाब साफ किया है। अब भी तेरा मुंह मीठा नहीं कराये तो इनकी मरजी।"

साभार: विजयदान देथा के संकलन
'चौधराइन की चतुराइ' से।

सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण के दिव्य दृष्टा
श्री महाराजा अग्रसेन

- स्वराज्यमणी अग्रवाल

आज से ५००० वर्ष पूर्व महाराजा अग्रसेन का राज्यारोहण इक्ष्वाकुकुल के राजा अग्निवर्ण के वंश में हुआ था। महाभारत युद्ध के बाद जब बड़े–बड़े साम्राज्यों का विनाश हो गया, तब महाजन पद, जनपद ग्राम्य आदि छोटे–छोटे राज्यों का श्री गणेश हुआ। महाभारत में लगभग १०० जनपदों के नाम दिए गए हैं। उनमें से ही एक महाराजा अग्रसेन का भी राज्य था।

लगभग १८ वर्ष से २० वर्ष की आयु में उनका राज्यारोहण बड़ी धूम–धाम से सम्पन्न हुआ। प्रारंभ से ही अस्त्र–शस्त्र में निपुण महाराजा अग्रसेन, दया, क्षमा, करुणा आदि गुणों से आपूर थे। इसलिए उनके राज्यारोहण के पश्चात ही, उन्होंने अपने सभी शत्रुओं को क्षमा प्रदान कर उन्हें निर्भय कर दिया। जो कभी शत्रु थे वही अब उनके मित्र बन गए। उन्होंने राज्य में कुलों को महत्व दिया। ये कुल, उद्योग, बुद्धि, रूप व धन में समान नहीं होते हुए जाति की दृष्टि से अपने को समान समझते थे। उनके इन गुणों के कारण ही शत्रुओं द्वारा इनमें फूट डालना असंभव था। सब एक हैं, सब समान हैं, सब एक दूसरे का भला देखें, समता, ममता के दिव्य गुणों से सुसज्जित जनता, परस्पर अत्यंत प्रेम भाव से एक दूसरे को समर्पित थे। राज्य के सशक्तिकरण के दिव्य दृष्टा अग्रसेन जी ने महाभारत युद्ध के भयंकर परिणाम को अपनी आंखों से देखा था, इसलिए अशांति, युद्ध, कलह, लोभ, ईर्ष्या आदि दुर्गुणों से वे स्वयं दूर रहे, अपनी प्रजा को भी समानता और प्रेम के ही आधार पर वीरोचित गुणों का उपदेश दिया। उन्होंने नियम बनाया कि :–

प्रजा के बीच परंपरागत अनुकूल धर्म वा व्यवहार चले आ रहें हों, उनका भलीभांति पालन किया जावे, धर्म के नाम पर जोर जबरदस्ती न की जाए। सभी अपने–अपनी आस्था और विश्वास के अनुकूल ही धर्म का आचरण करें। पक्षपात और लोभ के कारण किसी बात को अन्यथा न देखा जाए।

समाज में बुजुर्गों को विशेष समानता और परिवार में उनकी ही आज्ञा का पालन होता था। कुल वृद्धों को यह आज्ञा थी कि वह अपने भाइयों, पुत्रों को काबू में रखें। राज्य के गणाधिपतियों को परिवार के बुजुर्गों जैसा सम्मान दिया जाता था, क्योंकि वही राज्य के रक्षक थे, राजा व प्रजा की सुरक्षा उन पर ही निर्भर थी।

अग्रसेन ने भविष्य में युद्धों की पुनरावृत्ति न हो इसलिए यह निश्चय किया कि राज्य के सभी गोपनीय विषयों को गण के सम्मुख न उपस्थित किया जावे। गण के बड़े–बड़े पदाधिकारी स्वयं बैठकर विचार कर निर्णय ले लें। गण में फूट न पड़ने पावे इसका विशेष ध्यान रखा जाता था।

सामाजिक न्याय के लिए उन्होंने अपनी प्रजा में एक रुपैया, एक ईट भेंट देकर आने वाले परिवार को अपने जैसा बना लेने की प्रथा डाली उनकी दृष्टि में केवल वर्तमान ही नहीं आने वाले युगों तक प्रजा परस्पर प्रेम समता, ममता आदि गुणों से पुष्ट होकर राज्य को सशक्त बनावे यह दूर दृष्टि उनके जीवन का लक्ष्य थी। उनके शासन का आधार थी। वह जानते थे कि सृष्टि परिवर्तनशील है, प्रजा–राजा सभी आएंगे–जाएंगे लेकिन अगर शासन के नियम दूरगामी होंगे तो अनन्त काल तक प्रजा में, फूट नहीं पड़ेगी, लोग धर्मशील होंगे, जीवन में पर सेवा, पर उपकार को महत्व देंगे और राज्य में सुख शांति का वातावरण सदा बना रहेगा। वहां राज्य की राज्य से टक्कर नहीं होती थी, धर्म की धर्म से, ज्ञान की ज्ञान से, भक्ति की भक्त से टक्कर होती थी। उनकी इस दिव्य दृष्टि के कारण ही भारत की अग्रवाल जाति आज भी, धर्म प्राण, क्षमा, दया, करुणा, अहिंसा आदि गुणों से भरपूर सपूर्ण देश में अपना दान धर्म का डंका बजती फिर रही है।

नागकुल में अपने पुत्रों के और स्वयं का विवाह संबंध स्थापित कर उन्होंने जाति, संप्रदाय की मान्यताओं पर गहरी चोट की। धर्म सब एक है वह किसी को आपस में बैर रखना नहीं

सिखाता, विवाह संबंध गुणों पर आधारित हो, आपसी प्रेम और सद्भावना पर आधारित हो तो पति–पत्नी के बीच कभी कलह, तलाक जैसी स्थिति नहीं आएगी, यह उन्होंने स्वयं कर दिखाया। प्रजा को दुर्भिक्ष, आतंकियों आदि घरेलू शत्रु के आक्रमण पर राजा को ही उपाय करना चाहिए। इसके लिए भले ही अपने से अधिक शक्ति वाले शत्रु से युद्ध क्यों न करना पड़े। त्याग और तपस्या द्वारा भगवान को प्रसन्न करना राजा का धर्म है। उन्होंने दुर्भिक्ष में इंद्र से युद्ध किया, तालाब बनवाए, कुए, बाबड़ी, नहर द्वारा राज्य में पानी की व्यवस्था की। राज्य में शांति स्थापित हो इसके लिए वन में जाकर घनघोर तपस्या की। नारी को सम्मान देने पर ही राज्य में लक्ष्मी का निवास रहेगा, इस तथ्य को उन्होंने भली भांति समझा था। उसका पालन उन्होंने स्वयं किया और प्रजा को भी अनुकरण करने को कहा। एक पत्नी व्रत का निर्देश प्रजा में पालन किया जाता था।

न्याय वा दंड उन्होंने एक समान रखा। अपराधी हर हाल में दंडनीय है चाहे वह राजा का पुत्र हो, किसी अधिकारी का पुत्र हो या साधारण प्रजा का पुत्र हो। दंड व्यवस्था कठोर हो ताकि राज्य में अपराध कम हो। उनके राज्य में न्यायालयों के सम्मुख बहुत कम मुकद्दमें आते थे। न्याय युक्त शासन के कारण लोगों में परस्पर समझौता करने की आदत पड़ गई थी। न्याय करने में राजा हो अथवा प्रजा, दंड एक समान था। पक्षपात नहीं होता था। दंड भयंकर दिए जाते थे। अंग–भंग, शारीरिक कष्ट देने को भी अनुचित नहीं माना जाता था। यज्ञ द्वारा गोत्रों की स्थापना कर उन्होंने संपूर्ण अग्रवाल समाज में अच्छे वंश की नींव डाली, जिसके परिणाम स्वरूप अग्रवाल जाति आज भी शुद्ध एवं बुद्धि ज्ञान, धर्म का उदाहरण बनी।

सामाजिक न्याय–द्वारा ही राज्य के सशक्तिकरण था उनकी राजनीति ने हजारों वर्षों तक इस देश में सुख और शांति पूर्ण समय व्यतीत किया। विदेश आक्रमण लूट–पाट, आतंक का कारण जब प्रजा दुःखी हो गई तो उसने भी विद्रोह करना प्रारंभ कर दिया। लोभ, पक्षपात, ईर्ष्या, द्वेष आदि दुर्गुण उनमें प्रवेश करते गए। धीरे–धीरे राजा–प्रजा की दूरी बढ़ती गई। आपसी फूट, वैमनस्य के बीज पनपते गए। अग्रसेन जैसी दिव्य दृष्टि के अभाव में शासक केवल अपने तथा अपने राज्य के उत्थान तक सीमित हो गए। परिणाम हुआ कि भारत गुलाम हुआ। उनके ज्ञान की समस्त पूंजी नालंदा तक्षशिला के अग्निकांड में समाप्त हो गई। जो बचा खुचा था वह विदेशी उठा ले गए।

आज भी अगर अग्रसेन के समाजवाद, न्याय, राज्य व्यवस्था के आधार पर शासन का नियम बनाया जा सके तो भारत पुनः अपने खोए हुए गौरव को प्राप्त कर सकेगा इसमें दो मत नहीं।◆

मध्यप्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

सावन महोत्सव सम्पन्न

सावन महोत्सव का आयोजन श्री गणेश नारायण पुरोहित द्वारा श्री गणेशजी की पूजा, दीप प्रज्ज्वलन के साथ प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर भुट्टे के व्यंजन प्रतियोगिता में समाज की महिलाओं ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

नारियल सज्जा प्रतियोगिता में भी अद्भुत व विभिन्न तरीके से गणेश जी एवं कृष्णजी इत्यादि बनाकर ऐसा स्वरूप प्रदर्शित किया गया था कि उपस्थित जन समूह ने प्रतियोगियों की मेहनत व लगन की जबरदस्त तारीफ की।

भुट्टे के व्यंजन (मीठे–नमकीन) एवं नारियल सज्जा प्रतियोगिताओं में प्रथम एवं द्वितीय विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

मनोरंजन कार्यक्रम के अन्तर्गत महिलाओं के लिए श्रृंगार तंबोला का एक अनूठा कार्यक्रम श्रीमती सावित्री खण्डेलवाल एवं श्रीमती मंजू खण्डेलवाल द्वारा किया गया। जीतनवाले प्रतियोगियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

मनोरंजन क्रिकेट मैच का एक विचित्र व अद्भुत कार्यक्रम पुरुषों के लिए श्री कमलेश नाहटा द्वारा शानदार तरीके से सम्पन्न करवाकर उपस्थित सभी लोगों की वाहवाही लूटी। विजेता भारतीय टीम के भी खिलाड़ियों के साथ–साथ मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार श्री कैलाश जी अग्रवाल (बब्बाजी) को प्रदान किया गया।

मनोरंजन कार्यक्रम के अन्तिम चरण में सभी उपस्थित जनों के लिए महातंबोला श्रीमती सावित्री खण्डेलवाल द्वारा खिलाया गया।

सम्पूर्ण कार्यक्रमों में भारी मात्रा में पुरस्कार वितरित किए गए।

महामंत्री श्री रमेश गर्ग द्वारा आभार प्रदर्शन व स्वादिष्ट व्यंजनों से परीपूर्ण भोजन के पश्चात् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।◆

युगपथ चरण :

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति

राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा जरूरी

- डॉ. जगन्नाथ मिश्र

दिनांक १ फरवरी २००९ पूर्वाहन ११ बजे महाराणा प्रताप भवन, आर्यकुमार रोड, पटना बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति पटना द्वारा आयोजित हीरक जयन्ती समारोह मनाया गया। इस अवसर पर राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. जगन्नाथ मिश्र ने दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन कर अपने भाषण में बताया कि राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा जरूरी है। देश २०२० तक एक विकसित राष्ट्र बनने की प्रक्रिया में है परन्तु अभी भी ३० करोड़ ५० लाख लोगों को साक्षर बनाने की जरूरत है। शिक्षा समिति के पदेन अध्यक्ष मगध विश्वविद्यालय के पूर्व प्रति कुलपति प्रो. (डॉ.) श्याम सुन्दर तुलस्यान ने कहा कि शिक्षा विभिन्न क्षेत्रों में अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की। मुख्य अतिथि प्रो. (डॉ.) विश्वनाथ अग्रवाल ने बताया कि शिक्षा समिति शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही प्रशंसनीय कार्य कर रही है।

श्री प्रह्लाद शर्मा महासचिव ने अपने प्रतिवेदन में बताया कि शिक्षा समिति के ६० वर्ष पूरे हो गये हैं एवं वर्तमान समय में ४० छात्र/छात्राओं को उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति दी जाती है, अब तक ३००० से अधिक छात्रों को ऋण छात्रवृत्ति दी जा चुकी है। इस समारोह का मंच संचालन पूर्व अध्यक्ष व वर्तमान में न्यासी श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला ने किया। इसी अवसर पर पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. जगन्नाथ मिश्र, प्रो. विश्वनाथ अग्रवाल, प्रो. (डॉ.) श्याम सुन्दर तुलस्यान, डॉ. महादेव चन्द, श्री लक्ष्मी नारायण डोकानिया, श्री रतन प्रसाद गुप्ता, न्यासी श्री प्रह्लाद शर्मा, महासचिव श्री बिजय कुमार बुधिया, प्रबंधन्यासी श्री राम दयाल मस्करा आदि को श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला ने पुष्पगुच्छ, शॉल एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया।

इस सुअवसर पर शिक्षा समिति की स्थापना के ६० वर्ष पूरे होने पर हीरक जयंती स्मारिका का विमोचन भी डॉ. जगन्नाथ मिश्र एवं मंचस्थ अतिथियों द्वारा किया गया। तथा श्रीमती सुशीला मोहनका एवं श्रीमती सरोज गुटगुटिया को श्रीमती कुसुम तुलस्यान एवं श्रीमती सरोज जैन द्वारा माल्यार्पण कर सम्मानित किया गया। इस समारोह के स्वागताध्यक्ष पदेन प्रबंध न्यासी श्री बिजय कुमार बुधिया थे।

इसी अवसर पर श्री ओम प्रकाश टिबड़ेवाल कोषाध्यक्ष ने वित्तीय लेखा–जोखा प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री श्याम सुन्दर हिसारिया, श्री संजय मोहनका, श्री सुभाष अग्रवाल, श्री विष्णु गोयनका, श्री रमेश सुरेका, श्री राज कुमार गुटगुटिया, श्री बिमल बोहरा, श्री बिनय कुमार दारूका, श्री हरिकृष्ण अग्रवाल, श्री महेन्द्र कुमार चौधरी आदि ने महत्वपूर्ण योगदान तन–मन–धन से सहयोग प्रदान किया।

अन्त में श्री राज कुमार गुटगुटिया ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति पटना द्वारा आयोजित डॉ. राम मनोहर लोहिया शताब्दी जयन्ती सह व्याख्यानमाला दिनांक ०५.०४.२००९ को अपराहन २ बजे न्यू डाक बंगला रोड स्थित बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सभागार में किया गया।

सर्वप्रथम महासचिव श्री प्रहलाद शर्मा ने प्रो. (डा.) श्याम सुन्दर तुलस्यान, पदेन अध्यक्ष को अध्यक्षता करने और सभा की कार्यवाही शुरु करने का आग्रह किया।

डा. राम मनोहर लोहिया शताब्दी सह व्याख्यान माला का उद्घाटन पटना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. श्याम लाल ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया इसी, सुअवसर पर प्रो. श्याम लाल ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि लोहिया ने देश में समाजवादी विचार धारा को एक नई दिशा दी। कॉग्रेस के एकाधिकार के खिलाफ आवाज उठाई जिसका परिणाम यह हुआ कि ६० और ७० के दशक में कई राज्यों में गैर कॉग्रेसी सरकार बनी। श्री लाल ने बताया कि लोहिया एक क्रांतिकारी नेता थे।

इसी अवसर पर मुख्य अतिथि अखिल भारतवर्षीय गोशाला संध के अध्यक्ष श्री रामपाल अग्रवाल नूतन ने कहा कि लोहिया में समाजवादी विचार धारा कूट–कूट कर भरी थी। उनकी विचार धारा को पूरे देश में अपनाया।

मुख्य वक्ता पटना विश्वविद्यालय वाणिज्य महाविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. टी.पी. मैतिन ने ''वैश्विक आर्थिक मंदी और बिहार'' विषय पर आयोजित सेमिनार को संबोधित करते हुए कहा कि मंदी भी अर्थव्यवस्था का एक चक्र है। आज अगर बाजार में आर्थिक मंदी है तो कल आर्थिक तेजी भी आयेगी। अमेरिका में बैंक के ऋण का दुरुपयोग करने के कारण ही आर्थिक मंदी से भारत को घबराने की जरूरत नहीं है।

इस समारोह के संयोजक श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला थे। इसी अवसर पर बिहार माध्यमिक परीक्षा समिति द्वारा मैट्रिक परीक्षा में चार छात्र/छात्राओं को सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर मोमेन्टो, चैक एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया। तथा श्रीमती मंजू गुप्ता पुरस्कार से श्रीमती प्रो. शान्ति जैन को शाल एवं मोमेन्टो देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्री कमल नोपानी अध्यक्ष बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने भी डा. राम मनोहर लोहिया के आदर्शों पर चलने की राय दी।

अन्त में श्री राज कुमार गुटगुटिया संयुक्त महासचिव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।◆

आन्ध्र प्रादेशिक माहेश्वरी सभा

श्री रमेश कुमार बंग पुनः अध्यक्ष निर्वाचित

आन्ध्र प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के एकादश सत्र हेतु चुनाव हैदराबाद में रविवार दिनांक २ अगस्त २००९ को माहेश्वरी भवन, बेगमबाजार में सम्पन्न हुए। श्री रमेशकुमार बंग अध्यक्ष एवं श्री रामपाल अट्ठल मंत्री के रूप में सर्वसम्मति से पुनः निर्विरोध निर्वाचित हुए। चुनाव अधिकारी श्री ओमप्रकाश टावरी द्वारा प्रसारित विज्ञप्ति में यह जानकारी दी गयी। विज्ञप्ति में बताया गया कि अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा की ओर से पुडुचेरी के श्री विनयकिशोर कासट एवं चेन्नई के श्री चन्द्रप्रकाश मालपाणी पर्यवेक्षक के रूप में उपस्थित थे। सभी पदों के लिये अत्यंत ही सौहार्दपूर्ण वातावरण में चुनाव सर्वसम्मति से निर्विरोध सम्पन्न हुए। अन्य पदाधिकारियों में सिकन्दराबाद के श्री हनुमानदास मूंधड़ा अर्थमंत्री एवं हैदराबाद के श्री गोविन्द राठी संगठन मंत्री के रूप में निर्वाचित हुए। उपाध्यक्ष पद पर नगरद्वय से श्री विश्वम्भरलाल काबरा, तटीय आन्ध्र प्रदेश से श्री श्रीगोपाल बियाणी (विजयवाड़ा), उत्तर तेलंगाना से श्री ईश्वरचंद बजाज (सिरपुर कागजनगर), दक्षिण तेलंगाना से श्री सत्यनारायण कालाणी (वरंगल), संयुक्त मंत्री पद पर नगर द्वय से श्री रामचन्द्र चांडक, तटीय आन्ध्र प्रदेश से श्री सम्पतकुमार दूधानी (विशाखापटनम), उत्तर तेलंगाणा से श्री भगवानदास गिलडा (निजामाबाद), दक्षिण तेलंगाना से श्री रतनलाल लाहोटी (कोडंगल) सभी निर्विरोध निर्वाचित हुए। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के कार्यकारी मण्डल के नवनिर्वाचित सदस्यों में से श्री पुरुषोत्तमदास मानधणा को सर्वसम्मति से महासभा की कार्यसमिति हेतु निर्वाचित किया गया। बैठक में नगर द्वय के अतिरिक्त विशाखापटनम, कृष्णा, पूर्व–पश्चिम गोदावरी, वरंगल, महबूबनगर, करीमनगर, आदिलाबाद, निजामाबाद, मेदक और रंगारेड्डी जिलों से निर्वाचित कार्यकारी मंडल के सदस्य उपस्थित थे।◆

लक्ष्मी खेमका ने लॉ कॉलेज में द्वितीय स्थान प्राप्त किया

तिनसुकिया १६ अगस्त। पिछले दिनों डिब्रूगढ़ यूनिवर्सिटी द्वारा घोषित एल.एल.बी. के परीक्षाफल में तिनसुकिया लॉ कॉलेज की छात्रा लक्ष्मी खेमका ने लॉ कॉलेज में द्वितीय तथा यूनीवर्सिटी में आठवाँ स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण हुई है।

सुश्री लक्ष्मी खेमका तिनसुकिया के सुपरिचित व्यवसायी व सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री राजू खेमका व श्रीमती सुशीला खेमका की ज्येष्ठ सुपुत्री है तथा असम के स्वाधीनता सेनानी, पूर्व विधायक स्व. राधाकृष्ण खेमका व स्व. कस्तुरी देवी खेमका की सुपौत्री है। सम्मेलन इसके स्वर्णिम भविष्य की कामना करते हुए इनकी महत्वपूर्ण उपलब्धि पर हार्दिक बधाई देता है।◆

जयदीप बिहानी को राष्ट्रीय पुरस्कार

जयदीप बिहानी को इस वर्ष राष्ट्रीय पुरस्कार २००८, प्राप्त हुआ है। यह पुरस्कार उन्हें एम.एस.एम.ई. भारत सरकार द्वारा उत्कृष्ट गुणवत्ता उत्पाद (क्वालिटी प्रोडक्ट) निर्माण वर्ष २००८ के लिए प्रदान किया गया हैं।◆

निवेदन

सेवा में,
महामंत्री महोदय,
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
152बी, महात्मा गाँधी रोड,
कोलकाता–700 007

महोदय,

❑ कृपया मेरे पते में निम्न सुधार करने की कृपा करें।

❑ कृपया मेरी सदस्यता शुल्क बकाया के संदर्भ में मुझे जानकारी दें ताकि मैं उसे जमा करा सकूँ।

❑ मैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विशिष्ट/आजीवन/संरक्षक सदस्य बनना चाहता हूँ। कृपया निम्न पते पर मुझे एक सदस्यता फार्म डाक द्वारा भेजने की कृपा करें।

❑ विशिष्ट सदस्यता 500/–
❑ आजीवन सदस्यता 5000/–
❑ संरक्षक सदस्यता 51000/–

❑ मैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा प्रकाशित 'समाज विकास' पत्रिका का सदस्य बनना चाहता हूँ। सदस्यता शुल्क 100/– चेक/मनि ऑडर/नगद द्वारा संलग्न।

मेरा वर्तमान पता निम्न है

नाम :.....
पता :.....
.....
शहर :.....
पिन कोड :.....
फोन नं. :.....
मोबाईल :.....
ई–मेल :.....

हस्ताक्षर

श्रद्धांजलि :

झारखण्ड प्रांतिय मारवाड़ी सम्मेलन के (संताल परगना प्रमंडल के लिए) उपाध्यक्ष श्री किशोरी लालजी मोदी का 2 सितम्बर 2009 को निधन हो गया। आप कई अन्य संस्थाओं से भी जुड़े हुए थे।

मारवाड़ी सम्मेलन उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है।

विद्यालय छात्रों को छात्रवृत्ति वितरित

आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी शिक्षा कोष ट्रस्ट द्वारा आज स्कूली स्तर के छात्र–छात्राओं को सत्र २००९–१० के लिए छात्रवृत्ति वितरित की गई। शिक्षाकोष ट्रस्ट के प्रबन्ध न्यासी डॉक्टर आर.एम.साबू के अनुसार आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष रमेश कुमार बंग इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में एवं कोषाध्यक्ष रामप्रकाश भण्डारी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस वर्ष विद्यालय स्तर के ५५ जरूरतमंद छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की गई। इस अवसर पर उपस्थित लाभार्थियों एवं उनके परिजनों को सम्बोधित करते हुए रमेश कुमार बंग के कहा कि आज शिक्षा जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। अत: इसके बिना सुखी और सम्मानपूर्ण जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हम आप सभी अभिभावकों का दायित्व है कि हम अपने बच्चों को पढ़ाने में किसी प्रकार की कोताही न बरतें एवं छात्र–छात्राओं का भी दायित्व है कि वे मन लगाकर पढ़ें और स्वयं को प्रतिस्पर्द्धा कर पाने में सक्षम बनायें। राम प्रकाश भण्डारी ने भी छात्र–छात्राओं को उनके उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम के अन्त में अमित लड्ढा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर मारवाड़ी हिन्दी विद्यालय के प्रधानाध्यापक अनिल सूद विशेष रूप से उपस्थित थे।◆

Caring for Land and People...

MANGILALL RUNGTA

Mine Owners, Ferro Alloy Producer & Mineral Processors

- ***IRON ORE*** *BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***FERRO ALLOY*** *SILICO MANGANESE & FERRO MANGANESE*
- ***LIMESTONE POWDER***

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, **Web Site:** www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

CENTRAL MINES OFFICE

RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161;GRAM: "RUNGTA"
Email: rungta_bbl@yahoo.co.in

FERRO ALLOY DIVISION

TULASIDIHA, MERAMANDLI -759121, DIST- DHENKANAL, ORISSA, INDIA
Phone: 06732-259231/ 241, Fax: 91-6764-234745

HEAD OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2007-09
Date of Publication - 28, September 2009
RNI Regd. No. 2868/68

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com